मदनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुनफ़रिद किताब
इस्लाम
की बुन्यादी बातें
(हिस्सा 2)
साबिक़ा नाम
मदनी निसाब बराए नाज़िरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

त़ालिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 2)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"उर्दू"** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats app) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	॰ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

मदनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुनफ़रिद किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें

साबिक़ा नाम

मदनी निसाब बराए नाज़िरा

पेशकश

मजलिसे मद्रसतुल मदीना

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

दा'वते इस्लामी

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 2)

पेशकश : मजलिसे मद्रसतुल मदीना, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

त़बाअ़ते अव्वल : मुह़र्रमुल ह़राम, 1434 (ता'दाद : 11000)

त़बाअ़ते दुवुम : जुमादल ऊला, 1437 (ता'दाद : 11000)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 6, जुमादल उख़रा, 1433 हि. हवाला नम्बर : 168

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 2) "उर्दू"

(मत़बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

28 - 04 - 2012

E-mail : ilmiapak@dawateislami.net

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 2)

नाम मदनी मुन्ना .... वल्दिय्यत ....

मद्रसा ....

दरजा ....

पता ....

....

फ़ोन नम्बर, घर .... मोबाइल नम्बर ....

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 2)

जन्नत की बशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई ऐसा अ़मल इर्शाद फ़रमाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : गुस्सा न करो, तो तुम्हारे लिये जन्नत है। (مجمع الزوائد، ج ٨، ص ١٣٢، حدیث ١٢٩٩٠ دارالفکر بیروت)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को असरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीक़ी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "दा'वते इस्लामी" की तमाम मजालिस ब शुमूल "अल मदीनतुल इल्मिय्या" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अता फ़रमाए और हमारे हर अमले खैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ता'रीफ़ और सआदत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं: "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआदत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।" (تفسير البيضاوى، پ٢٢، الاحزاب، تحت الاية: ٧١، ج٤، ص٣٨٨)

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

कुरआने मजीद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आख़िरी किताब है, इस को पढ़ने और इस पर अ़मल करने वाला दोनों जहां में कामयाब व कामरान होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लम गीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त अन्दरून व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस ब नाम मद्रसतुल मदीना क़ाइम हैं। सिर्फ़ पाकिस्तान में ता दमे तह़रीर कमो बेश 75 हज़ार मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इन मदारिस में कुरआने करीम के साथ साथ दीनी मा'लूमात और तरबिय्यत पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है ताकि मद्रसतुल मदीना से फ़ारिग़ होने वाला त़ालिबे इल्म ता'लीमे कुरआन के साथ साथ दीने इस्लाम की ता'लीमात से भी रू शनास हो और उस में इल्मो अ़मल दोनों रंग नज़र आएं, वोह हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर हो, अच्छाई और बुराई की पहचान रखता हो, बुरी आ़दतों से पाक और अच्छे अवसाफ़ का मालिक हो और बड़ा हो कर मुआ़शरे का ऐसा बा किरदार मुसलमान बने कि उ़म्र भर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ रहे।

शो'बए नाज़िरा में कम उ़म्र मदनी मुन्ने ज़ेरे ता'लीम होते हैं चुनान्चे इन की ज़ेहनी सत़ह़ के मुत़ाबिक़ ऐसा निसाब पेश किया जा रहा है जिस में इब्तिदाई दीनी मा'लूमात तअ़व्वुज़, तस्मिया, सना, मुख़्तसर आसान दुआ़एं, बुन्यादी अ़क़ाइद, दीगर ज़रूरी मसाइल, मा'लूमाते आ़म्मा में आस्मानी किताबें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और सह़ाबा व औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ इब्तिदाई मा'लूमात मौजूद हैं।

"निसाबे नाज़िरा" की पेशकश का सेहरा मजलिसे मद्रसतुल मदीना और मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के सर है जब कि दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से इस की शरई तफ़्तीश करवाई गई है।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाएं
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाएं

मजलिसे मद्रसतुल मदीना
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
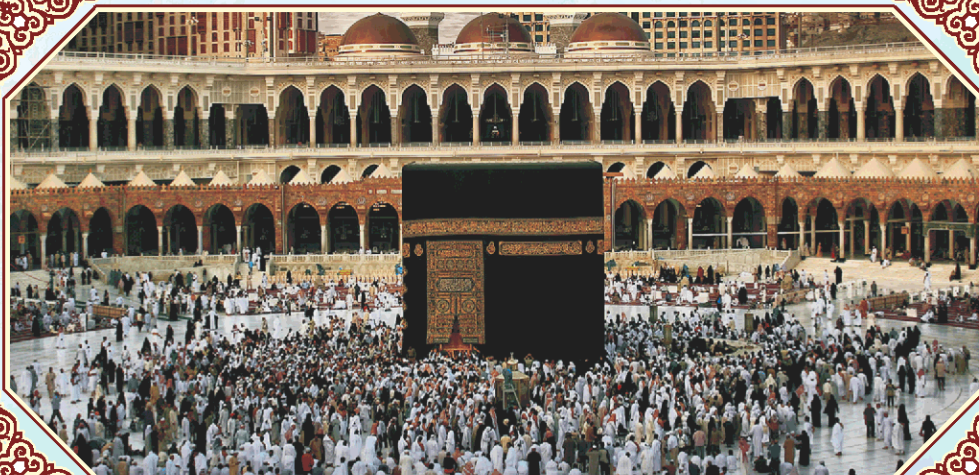
अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही [1]

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

[1] ......वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 102

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर
करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही

हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा
मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

"सदाए मदीना" दूं रोज़ाना सदक़ा
अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही

ना "नेकी की दा'वत" में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही

सआ़दत मिले दर्से "फ़ैज़ाने सुन्नत"
की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही

मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं
चटाई का हो बिस्तरा या इलाही

है आ़लिम की ख़िदमत यक़ीनन सआ़दत
हो तौफ़ीक़ इस की अ़ता या इलाही

हर इक "मदनी इन्आ़म" ऐ काश पाऊं
करम कर पए मुस्त़फ़ा या इलाही

मैं नीची निगाहें रखूं काश अकसर
अ़ता कर दे शर्मो ह़या या इलाही

हमेशा करूं काश पर्दे में पर्दा
तू पैकर ह़या का बना या इलाही

लिबास अपना सुन्नत से आरास्ता हो
इमामा हो सर पर सजा या इलाही

सभी रुख़ पे इक मुश्त दाढ़ी सजाएं
बनें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही

ग़ुसीले मिज़ाज और तमस्ख़ुर की ख़स्लत
से अ़त्तार को तू बचा या इलाही

दिन का ए'लान

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی शुअ़बुल ईमान में नक़्ल करते हैं : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : रोज़ाना सुब्ह़ जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त दिन येह ए'लान करता है : अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा'द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा ।
(شعب الایمان، الحدیث: ۳۸۴۰، ج۳، ص۳۸۶)
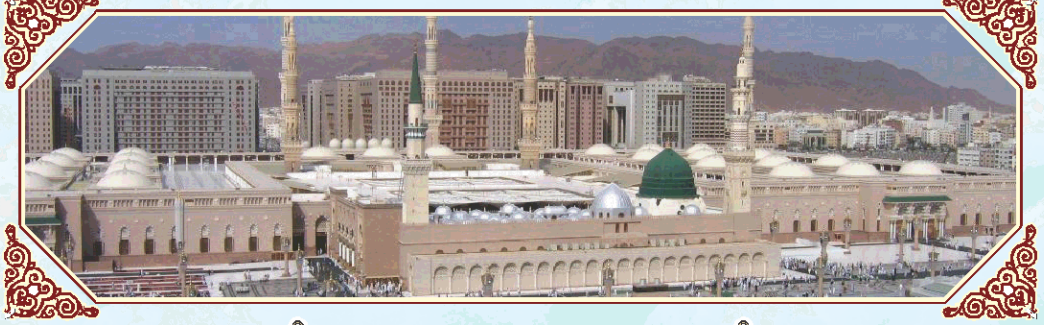
ना'ते मुस्तफ़ा ﷺ [1]

सच्ची बात सिखाते येह हैं — सीधी राह चलाते येह हैं

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ — सारी कसरत पाते येह हैं

ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा — पीते हम हैं पिलाते येह हैं

रंगे बे रंगों का पर्दा — दामन ढक के छुपाते येह हैं

मां जब इक लौते को छोड़े — आ आ कह के बुलाते येह हैं

बाप जहां बेटे से भागे — लुत्फ़ वहां फ़रमाते येह हैं

लाख बलाएं करोड़ों दुश्मन — कौन बचाए ? बचाते येह हैं

अपनी बनी हम आप बिगाड़ें — कौन बनाए ? बनाते येह हैं

कह दो रज़ा से ख़ुश हो ख़ुश रह
मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं

[1] ...... हदाइके़ बख़्शिश, अज़ : इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رحمۃ الرحمٰن हिस्सए अव्वल, स. 170

(नमाज़)

सूरतुल फ़ातिहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۠﴿۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का। बहुत मेहरबान रह़मत वाला, रोज़े जज़ा का मालिक। हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें। हम को सीधा रास्ता चला रास्ता उन का जिन पर तू ने एह़सान किया, ना उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और ना बहके हुओं का।

सूरतुल इख़्लास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। ना उस की कोई अवलाद और ना वोह किसी से पैदा हुवा, और ना उस के जोड़ का कोई।

रुकूअ़ की तस्बीह़

سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ ط

तर्जमा : पाक है मेरा अ़ज़मत वाला परवर दगार।

तस्मीअ़ (रुकूअ़ से उठते हुवे)

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की।

तह़मीद

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे मालिक ! सब ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं।

सजदे की तस्बीह़

سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

तर्जमा : पाक है मेरा परवर दगार सब से बुलन्द।

तशह्हुद

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ ط
اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ O
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ O

तर्जमा : तमाम क़ौली, फ़े'ली, और माली इबादतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और बरकतें। सलाम हो हम पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं।

दुरूदे इब्राहीमी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌO
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌO

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और उन की आल पर। जिस त़रह़ तूने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर और उन की आल पर, बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बरकत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने बरकत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और उन की आल पर बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

दुआए मासूरा

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

ख़ुरूजे बिसुन्इही

① اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

तर्जमा : तुम पर सलामती हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत।

[1] ......مراقی الفلاح مع حاشیۃ الطحطاوی، کتاب الصلاۃ، فصل فی کیفیۃ ترتیب، ص ۲۷۸ نماز کے احکام، ص ۱۸۱

चौथा कलिमा तौहीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ط يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ط ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है, उसी के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَأً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तर्जमा : मैं अल्लाह से मुआफ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर, छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर, और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से जिस को मैं नहीं जानता (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की मदद से जो बहुत बुलन्द अ़ज़मत वाला है।

छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْـًٔا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَ الْغِیْبَةِ وَ الْبِدْعَةِ وَ النَّمِیْمَةِ وَ الْفَوَاحِشِ وَ الْبُهْتَانِ وَ الْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَ اَسْلَمْتُ وَ اَقُوْلُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने इस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं।

दुआएं

इल्म में इज़ाफ़े की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ط

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! ऐ मेरे रब ! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा ।

दूध पीने की दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ ط [1]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! हमारे लिये इस में बरकत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा ।

बैतुल ख़ला में जाने से पहले की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ ط [2]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मैं नापाक जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह मांगता हूं ।

बैतुल ख़ला से बाहर निकलने के बा'द की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنِّى الْاَذٰى وَعَافَانِيْ ط [3]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझ से अज़िय्यत दूर की और मुझे आफ़िय्यत दी ।

---

[1] ……سنن ابی داود، کتاب الاشربة، باب مایقول اذا شرب اللبن، الحدیث: ۳۷۳۰، ج ۳، ص ۴۷۶

[2] ……صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عند الخلاء، الحدیث: ۶۳۲۲، ج ۴، ص ۱۹۵

[3] ……مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الدعاء، باب مایقول الرجل …الخ، الحدیث: ۲، ج ۷، ص ۱۴۹

आईना देखते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ ط [1]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरी सीरत भी अच्छी कर दे ।
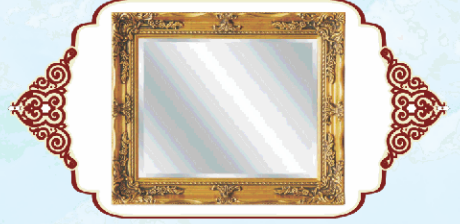
सुरमा लगाते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ ط

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सुनने और देखने से बेहरामन्द फ़रमा ।

किसी मुसलमान को मुस्कुराता देख कर पढ़ने की दुआ

اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ ط [2]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को हमेशा मुस्कुराता रखे ।

तेल और इत्र लगाते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط [3]

तर्जमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ।

---

[1] ......الحصن الحصین، ص ۱۰۲

[2] ......صحیح البخاری، الحدیث: ۳۲۹۴، ج۲، ص ۴۰۳

[3] ......صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفة ابلیس وجنوده، الحدیث: ۳۲۹۴، ج۲، ص ۴۰۳

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ط [1]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे।

मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ط [2]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल मांगता हूं।

छींक आने पर पढ़ने की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ حَالٍ ط [3]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हर ह़ाल में शुक्र है।

छींकने वाले का जवाब देने की दुआ़

یَرْحَمُكَ اللّٰهُ ط [4]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म करे।

---

[1] ...... سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، الحدیث: ۴۶۵، ج ۱، ص ۱۹۹

[2] ...... سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، الحدیث: ۴۶۵، ج ۱، ص ۱۹۹

[3] ...... سنن الترمذی، کتاب الادب، الحدیث: ۲۷۴۷، ج ۴، ص ۳۳۹

[4] ...... صحیح البخاری، کتاب الادب، الحدیث: ۶۲۲۴، ج ۴، ص ۱۶۳

घर से निकलते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ ط [1]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से (मैं निकलता हूं और) मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से है।

घर में दाखि़ल होते वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ [2]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाखि़ल होने और निकलने की जगहों की भलाई त़लब करता हूं।

[1] ...... سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول الرجل اذا خرج من بیتہ، الحدیث: ۵۰۹۵، ج ۴، ص ۴۲۰

[2] ...... سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول الرجل اذا دخل بیتہ، الحدیث: ۵۰۹۶، ج ۴، ص ۴۲۰

ईमानियात व अ़क़ाइद

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ
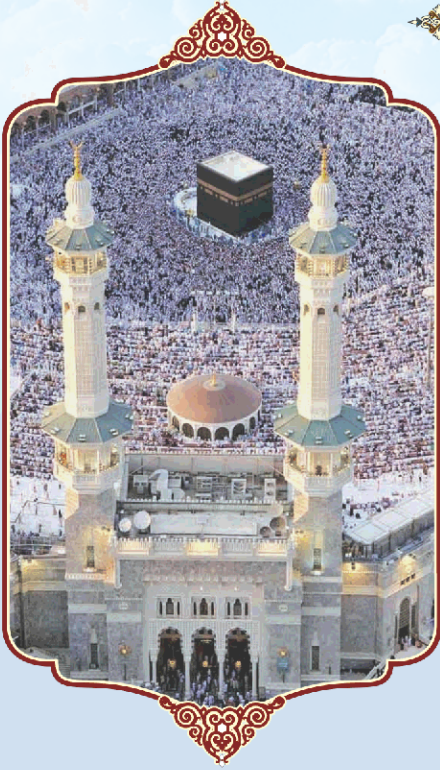
सुवाल: क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक है?

जवाब: जी नहीं! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं।

सुवाल: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कब से है और कब तक रहेगा?

जवाब: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

सुवाल: तमाम जहान वालों को किस ने बनाया?

जवाब: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम जहान वालों को बनाया।

सुवाल: सब को पालने वाला कौन है?

जवाब: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब को पालने वाला है।

सुवाल: सब को रिज़्क़ कौन देता है?

जवाब: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब को रिज़्क़ देता है।

सुवाल: क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कोई सिफ़त बुरी हो सकती है?

जवाब: हरगिज़ नहीं! बुरी सिफ़त ऐ़ब है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर ऐ़ब से पाक है।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुवाल क्या हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी आएगा ?

जवाब जी नहीं ! हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आएगा क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं।

सुवाल ख़ातमुन्नबिय्यीन का क्या मत़लब है ?

जवाब इस का मत़लब है : तमाम नबियों में सब से आख़िरी नबी।

सुवाल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस उ़म्र में ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चालीस साल की उ़म्र में ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया।

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से ज़ियादा इ़ल्म व इख़्तियार किस नबी को अ़ता फ़रमाया ?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को।

सुवाल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक सुनते ही हमें क्या करना चाहिये ?

जवाब दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये।

सुवाल क्या हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया था ?

जवाब जी नहीं ! हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया नहीं था।

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में नमाज़ का कितनी बार हुक्म फ़रमाया है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में नमाज़ का 700 से ज़ाइद मरतबा हुक्म फ़रमाया है।

सुवाल जो शख़्स नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे वोह काफ़िर है।

सुवाल हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस चीज़ को अपनी आंखों की ठन्डक फ़रमाया है ?

जवाब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ को अपनी आंखों की ठन्डक फ़रमाया है।

सुवाल नमाज़ पढ़ने के चन्द फ़ज़ाइल बताएं।

जवाब नमाज़ पढ़ने के चन्द फ़ज़ाइल येह हैं :

- नमाज़ दीन का सुतून है।
- नमाज़ मोमिन की मे'राज है।
- नमाज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।
- नमाज़ से रहमत नाज़िल होती है।
- नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं।
- नमाज़ बीमारियों से बचाती है।
- नमाज़ दुआओं की क़बूलिय्यत का सबब है।
- नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है।
- नमाज़ अंधेरी क़ब्र का चराग़ है।
- नमाज़ क़ब्र और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाती है।
- नमाज़ जन्नत की कुंजी है।
- नमाज़ पुल सिरात़ के लिये आसानी है।
- नमाज़ मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है।
- नमाज़ी को बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी।
- नमाज़ी को क़ियामत के दिन दाएं हाथ में आ'माल नामा दिया जाएगा।
- नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि बरोज़े क़ियामत उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार नसीब होगा।

सुवाल नमाज़ ना पढ़ने के क्या नुक़्सानात हैं ?

जवाब नमाज़ ना पढ़ने के नुक़्सानात येह हैं :

- बे नमाज़ी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है।
- बे नमाज़ी की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी।
- बे नमाज़ी पर एक गन्जा सांप मुसल्लत़ कर दिया जाएगा।
- बे नमाज़ी से बरोज़े क़ियामत सख़्ती से ह़िसाब लिया जाएगा।
- जो जान बूझ कर एक नमाज़ भी छोड़ता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है।
- नमाज़ में सुस्ती करने वाले को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पसलियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी।

सुवाल क्या भूल कर खाने पीने से रोज़ा टूट जाता है ?

जवाब जी नहीं ! भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं टूटता।

सुवाल रोज़ा कब फ़र्ज़ हुवा ?

जवाब रोज़ा 10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 2 हिजरी को फ़र्ज़ हुवा।

सुवाल क्या रोज़ा रखने से आदमी बीमार हो जाता है ?

जवाब जी नहीं ! बल्कि ह़दीसे पाक में है कि "रोज़ा रखो सिह़्ह़त याब हो जाओगे।"[1]

सुवाल रोज़ा रखने की कोई फ़ज़ीलत बयान करें।

जवाब ह़दीसे पाक में है जिस ने माहे रमज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सुर्ख़ याक़ूत या सब्ज़ ज़बरजद का बनाया जाएगा।[2]

---

[1] ...... المعجم الاوسط، الحديث ۸۳۱۲، ج۲، ص۱۴۲

[2] ...... مجمع الزوائد، الحديث: ۴۷۹۲، ج۳، ص۳۴۶

फ़िरिश्ते

सुवाल चार मश्हूर फ़िरिश्ते कौन से हैं और येह क्या काम करते हैं ?

जवाब चार मश्हूर फ़िरिश्ते येह हैं :

﴾1﴿......हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ﴾3﴿...... हज़रते इस्राफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام

﴾2﴿...... हज़रते मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام ﴾4﴿...... हज़रते इज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام

और उन के काम येह हैं :

- ......हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के ज़िम्मे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वही को अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام तक पहुंचाना है ।
- ......हज़रते मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام के ज़िम्मे रिज़्क़ पहुंचाना है ।
- ......हज़रते इस्राफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام के ज़िम्मे क़ियामत के दिन सूर फूंकना है ।
- ......हज़रते इज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के ज़िम्मे रूह क़ब्ज़ करना है ।

सुवाल इन्सान के साथ हर वक़्त दो फ़िरिश्ते होते हैं उन को क्या कहते हैं ?

जवाब किरामन कातिबीन ।

सुवाल किरामन कातिबीन के ज़िम्मे क्या काम है ?

जवाब लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों को लिखना ।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام
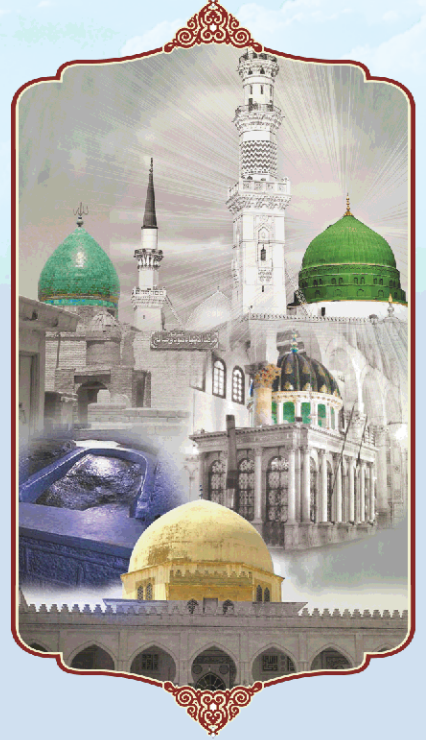
सुवाल नबी किसे कहते हैं ?

जवाब नबी उस इन्सान को कहते हैं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ की हिदायत के लिये वह़ी भेजी हो ख़्वाह फ़िरिश्ते के ज़रीए़ या फ़िरिश्ते के बिग़ैर ।

सुवाल रसूल किसे कहते हैं ?

जवाब रसूल के लिये इन्सान होना ज़रूरी नहीं बल्कि रसूल फ़िरिश्तों में भी होते हैं और इन्सानों में भी और बा'ज़ उ़लमा येह फ़रमाते हैं कि जो नबी नई शरीअ़त लाए उसे रसूल कहते हैं ।

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'दाद बताइये ।

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام भेजे और वोही उन की सह़ीह़ ता'दाद जानता है ।

सुवाल अबुल बशर किस नबी को कहा जाता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को अबुल बशर कहा जाता है ।

सुवाल किस नबी के ज़माने में तूफ़ान से पूरी दुन्या ग़र्क़ हुई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में ।

मो'जिज़ाते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

सुवाल किस नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने चांद के दो टुकड़े किये ?

जवाब हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ।

सुवाल वोह कौन सी आयत है जिस में चांद के दो टुकड़े होने का ज़िक्र है ?

जवाब اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝١ (پ٢٧، القمر:١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद ।

सुवाल वोह कौन से नबी हैं जिन के ज़मीन पर एड़ियां रगड़ने से "ज़म ज़म" का चश्मा फूट पड़ा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़मीन पर एड़ियां रगड़ने से ज़म ज़म का चश्मा फूट पड़ा ।

सुवाल वोह कौन से नबी عَلَيْهِ السَّلَام हैं जिन्हों ने पथ्थर पर अ़सा मारा तो बारह चश्मे फूट पड़े ?
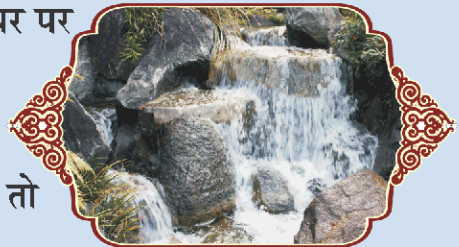
जवाब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पथ्थर पर अ़सा मारा तो बारह चश्मे फूट पड़े ।

सुवाल वोह कौन से नबी عَلَيْهِ السَّلَام हैं जिन की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हुवे ?

जवाब वोह नबी हमारे आक़ा सरवरे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं ।

सुवाल वोह कौन से नबी عَلَيْهِ السَّلَام हैं जिन्हें काफ़िरों ने आग में डाला तो वोह उन पर ठन्डी हो गई ?

जवाब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को काफ़िरों ने आग में डाला तो वोह उन पर ठन्डी हो गई ।

सुवाल वोह आयत मअ़ तर्जमा सुनाएं जिस में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर आग ठन्डी होने का ज़िक्र है ।

जवाब قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ (پ۱۷، الانبیاء: ۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर ।

पांच को पांच से पहले

प्यारे मदनी मुन्नो ! यक़ीनन ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आइन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद धोका है । क्या मा'लूम आइन्दा लम्हे हम मौत से हम आग़ोश हो चुके हों । रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो : (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुरसत को मश्ग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले ।

(المستدرک، الحدیث: ۷۹۱۶، ج۵، ص۴۳۵)

आसमानी किताबें

सुवाल सब से पहले कौन सी आसमानी किताब नाज़िल हुई ?

जवाब सब से पहले तौरैत नाज़िल हुई ।

सुवाल तोरैत किस रसूल पर नाज़िल हुई ?

जवाब तौरैत हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई ।

सुवाल तौरैत के बा'द कौन सी किताब नाज़िल हुई ?

जवाब तौरैत के बा'द ज़बूर नाज़िल हुई ।

सुवाल ज़बूर किस रसूल पर नाज़िल हुई ?

जवाब ज़बूर हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई ।

सुवाल ज़बूर के बा'द कौन सी किताब नाज़िल हुई ?

जवाब ज़बूर के बा'द इन्जील नाज़िल हुई ।

सुवाल इन्जील किस रसूल पर नाज़िल हुई ?

जवाब इन्जील हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई ?

सुवाल सब से आख़िर में कौन सी आसमानी किताब नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में क़ुरआने मजीद नाज़िल हुवा ।

सुवाल क़ुरआने मजीद किस रसूल पर नाज़िल हुवा ।

जवाब क़ुरआने मजीद हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा ।

क़ुरआने मजीद

सुवाल क़ुरआने मजीद की सब से पहली आयत कहां नाज़िल हुई ?

जवाब क़ुरआने मजीद की सब से पहली आयत ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई ।

सुवाल क़ुरआने मजीद किस ज़बान में है ?

जवाब क़ुरआने मजीद अ़रबी ज़बान में है ।

सुवाल क़ुरआने मजीद का सब से पहला नाज़िल होने वाला लफ़्ज़ कौन सा है ?

जवाब اِقْرَاْ जिस के मा'ना हैं "पढ़ो" ।

सुवाल क़ुरआने मजीद कितने अ़र्से में नाज़िल हुवा ?

जवाब क़ुरआने मजीद तक़रीबन ﴾23﴿ साल में नाज़िल हुवा ।[1]

सुवाल क़ुरआने मजीद के कुल कितने पारे हैं ?

जवाब क़ुरआने मजीद के कुल ﴾30﴿ पारे हैं ।

सुवाल क़ुरआने मजीद में कुल कितनी सूरतें हैं ?

जवाब क़ुरआने मजीद में कुल ﴾114﴿ सूरतें हैं ।

1 ...... الجامع لاحكام القران، سورة القدر، ج ٢٠، ص ٩٢
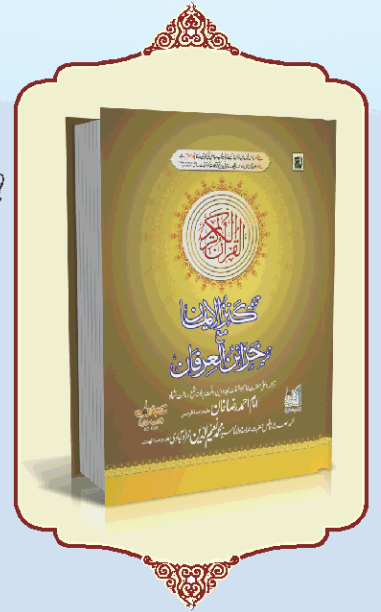
तिलावते क़ुरआने मजीद के आदाब

सुवाल क़ुरआने पाक की तिलावत करते वक़्त किस रुख़ पर बैठना चाहिये ?

जवाब क़ुरआने पाक की तिलावत करते वक़्त क़िब्ला रुख़ होना चाहिये कि येह मुस्तहब है।

सुवाल तकया या टेक लगा कर क़ुरआने पाक पढ़ना कैसा है ?

जवाब तकया या टेक लगा कर क़ुरआने पाक नहीं पढ़ना चाहिये बल्कि सीधा बैठ कर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ तिलावत करनी चाहिये।

सुवाल क्या क़ुरआने मजीद लेट कर पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी हां ! क़ुरआने मजीद लेट कर भी पढ़ सकते हैं जब कि पाउं सिमटे हुवे हों।

सुवाल क़ुरआने मजीद की तिलावत शुरूअ़ करने से पहले क्या पढ़ना चाहिये ?

जवाब क़ुरआने मजीद की तिलावत शुरूअ़ करने से पहले तअ़व्वुज़ (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰه शरीफ़) और तस्मिया (या'नी बिस्मिल्लाह शरीफ़) पढ़ना चाहिये।

सुवाल वोह कौन सी जगहें हैं जहां क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना ना जाइज़ है ?

जवाब ग़ुस्लख़ाना और नजासत की जगह (मसलन बैतुलख़ला) में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना ना जाइज़ है।

सुवाल क़ुरआने मजीद की त़रफ़ पीठ या पाउं करना कैसा है ?

जवाब क़ुरआने मजीद की त़रफ़ पीठ या पाउं करना अदब के ख़िलाफ़ है, ऐसा नहीं करना चाहिये।

सुवाल कु़रआन शरीफ़ की तिलावत के दौरान जमाही आ जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब कु़रआन शरीफ़ की तिलावत के दौरान जमाही आ जाए तो तिलावत मौक़ूफ़ (या'नी बन्द) कर दें क्यूंकि जमाही शैत़ानी असर है ।

सुवाल कु़रआन शरीफ़ की तिलावत के दौरान अगर पीर साह़िब, आ़लिमे दीन, उस्ताज़ साह़िब या वालिदैन में से कोई आ जाए तो क्या उन की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो सकते हैं ?

जवाब जी हां ! तिलावत मौक़ूफ़ कर के उन की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो सकते हैं ।

सुवाल बा'ज़ लोग कहते हैं कि अगर कु़रआने पाक खुला हो तो उसे शैत़ान पढ़ता है इस की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब येह बात ग़लत़ है और इस की कोई अस्ल नहीं ।

सुवाल कु़रआने पाक को जुज़दान या ग़िलाफ़ में रखने का क्या हुक्म है ?

जवाब कु़रआने पाक को जुज़दान या ग़िलाफ़ में रखना जाइज़ है । सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के दौरे मुबारक से मुसलमानों का इस पर अ़मल है ।

सुवाल कु़रआने मजीद को बुलन्द आवाज़ से पढ़ना कैसा है ?

जवाब कु़रआने मजीद को बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल है कि जहां तक आवाज़ पहुंचेगी वोह अश्या पढ़ने वाले के ईमान की बरोज़े क़ियामत गवाह होंगी । अलबत्ता इस बात का ख़याल रखा जाए कि किसी नमाज़ी, बीमार और सोने वाले को तकलीफ़ न पहुंचे ।

सुवाल: कु़रआन शरीफ़ की तिलावत सुनने के बजाए बातें करना या इधर उधर देखना कैसा है?

जवाब: कु़रआन शरीफ़ की तिलावत ख़ामोशी और तवज्जोह से सुनना चाहिये इस दौरान गुफ़्तगू करना गुनाह है।

सुवाल: बहुत से इस्लामी भाइयों का कु़रआन ख़्वानी वग़ैरा में बुलन्द आवाज़ से कु़रआन शरीफ़ पढ़ना कैसा है?

जवाब: इजतिमाई तौ़र पर बुलन्द आवाज़ से कु़रआन पढ़ना मन्अ़ है, ऐसे मौक़अ़ पर सब को आहिस्ता आवाज़ में कु़रआन शरीफ़ पढ़ना चाहिये।

सुवाल: मद्रसे में त़लबा बुलन्द आवाज़ से कु़रआन शरीफ़ पढ़ें तो इस का क्या हुक्म है?

जवाब: मद्रसे में त़लबा का बुलन्द आवाज़ से कु़रआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है।

इल्म से बेहतर कोई शै नहीं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी से मह़वे गुफ़्तगू थे कि वह़ी नाज़िल हुई : इस सह़ाबी की ज़िन्दगी की एक साअ़त (यानी घन्टा भर) बाक़ी रह गई है। येह वक़्ते अ़स्र था। रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह बात उस सह़ाबी को बताई तो उन्हों ने मुज़्तरिब हो कर इल्तिजा की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो।" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "इल्म सीखने में मशग़ूल हो जाओ।" चुनान्चे वोह सह़ाबी इल्म सीखने में मशग़ूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। रावी फ़रमाते हैं कि अगर इल्म से बेहतर कोई शै होती तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी का हुक्म इरशाद फ़रमाते।

(तफ़्सीरे कबीर, सूरतुल बक़रह, जि.1, स.410)
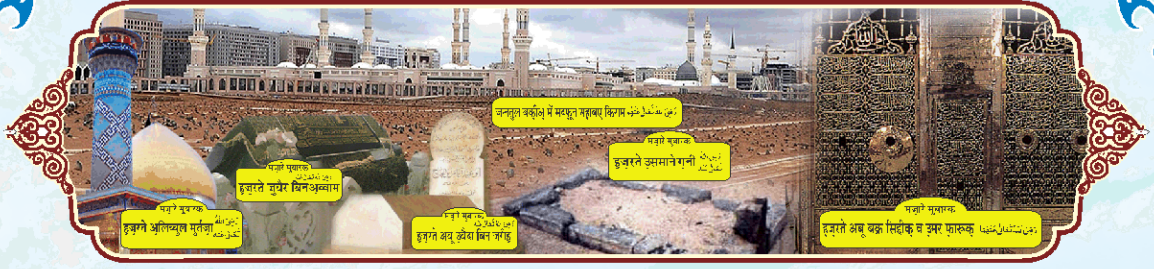
सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان

सुवाल अ़शरए मुबश्शरह से क्या मुराद है ?

जवाब अ़शरए मुबश्शरह से मुराद वोह दस (10) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان हैं जिन्हें हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या में ही जन्नत की बिशारत दी ।

सुवाल अ़शरए मुबश्शरह में कौन कौन से सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان शामिल हैं ?

जवाब अ़शरए मुबश्शरह[1] में जो सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان शामिल हैं उन के अस्माए गिरामी येह हैं :

﴿1﴾ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿2﴾ सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿3﴾ सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿4﴾ सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿5﴾ सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿6﴾ सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿7﴾ सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿8﴾ सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿9﴾ सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

﴿10﴾ सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

सुवाल मोअज़्ज़िने रसूल किस सह़ाबी को कहते हैं ?

जवाब मोअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को कहते हैं ।

[1]...... سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۷۴۸، ۳۷۴۹، ج۵، ص۴۱۶، ۴۱۷

सुवाल सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तल्वार) किस सहाबी का लक़ब है ?

जवाब सैफ़ुल्लाह हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को कहते हैं ।

सुवाल असदुल्लाह (अल्लाह का शेर) किस सहाबी को कहते हैं ?

जवाब असदुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْكَرِیْم को कहते हैं ।

सुवाल सय्यिदुश्शुहदा किस सहाबी को कहते हैं ?

जवाब सय्यिदुश्शुहदा हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को कहते हैं ।

सुवाल क्या क़ुरआने मजीद में किसी सहाबी का नाम आया है ?

जवाब जी हां ! क़ुरआने मजीद में एक सहाबी का नाम आया है ।

सुवाल क़ुरआने मजीद में किस सहाबी का नाम आया है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम क़ुरआने मजीद के 22 वें पारे में सूरए अहज़ाब की 37 वीं आयत में आया है ।

सुवाल सब से ज़ियादा अहादीस किस सहाबी से मरवी हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है ।

सुवाल बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'त गो शाइर सहाबी का नाम बताएं ।

जवाब हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

जिस मुसलमां ने देखा उन्हें इक नज़र
उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम

सुवाल वलियों के सरदार कौन हैं ?

जवाब ताजदारे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی

सुवाल चन्द औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नाम बताइये और येह भी बताइये कि इन के मज़ाराते मुबारका कहां हैं ?

जवाब जन्नत के आठ दरवाज़ों की निस्बत से आठ औलियाए किराम के नाम और मज़ारात येह हैं :

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

- इन का मज़ारे मुक़द्दस हिन्द के शहर "देहली" में है ।

﴾2﴿...... क़ुत्बे मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ारे मुबारक जन्नतुल बक़ीअ़ में है।

﴾3﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुलआ़रिफ़ीन ख़्वाजा शम्सुद्दीन सियालवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के शहर "सियाल शरीफ़" में है।

﴾4﴿......ह़ज़रते पीर सय्यिद महेर अ़ली शाह गोलड़वी ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के शहर "गोलड़ा शरीफ़" में है।

﴾5﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल लत़ीफ़ भिटाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के सूबा बाबुल इस्लाम (सिंध) के शहर "भट" में है।

﴾6﴿......ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान ह़सन رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

- इन का मज़ार शरीफ़ हिन्द के शहर "बरेली शरीफ़" में है।

﴾7﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बर्री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के दारुल ह़ुकूमत "इस्लामाबाद" में है।

﴾8﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

- इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के शहर "बाबुल मदीना (कराची)" में है।

सुवाल क्या मौजूदा दौर में भी कोई यादगारे अस्लाफ़ शख़्सिय्यत है ?

जवाब जी हां ! ......अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मौजूदा दौर की यादगारे अस्लाफ़ शख़्सिय्यत हैं।

करामाते सहाबा व औलियाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِين

 सुवाल: करामत किसे कहते हैं ?

 जवाब: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर होने वाली बात को करामत कहते हैं।

 सुवाल: करामत की कितनी क़िस्में हैं ?

 जवाब: अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुब्की رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने अपनी किताब "त़बक़ातुश्शाफ़िइय्यतिल कुब्रा" में औलियाए किराम की करामात से मुतअ़ल्लिक़ एक सो (100) से ज़ाइद अक़्साम तह़रीर फ़रमाई हैं।

इन में से चन्द अक़्साम येह हैं :

- मुर्दों को ज़िन्दा करना
- मक़्बूलिय्यते दुआ़
- मुर्दों से कलाम करना
- ज़माना मुख़्तसर व त़वील हो जाना
- दरियाओं पर तसर्रुफ़
- जानवरों का फ़रमां बरदार होना
- ज़मीन को समेट देना
- ग़ैब की ख़बरें देना
- नबातात से गुफ़्तगू
- दिलों को अपनी त़रफ़ खींचना
- शिफ़ाए अमराज़
- खाए पिये बिग़ैर ज़िन्दा रहना वग़ैरा

सुवाल: चन्द औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की करामात बयान कीजिये।

जवाब ﴾1﴿……हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का पकी हुई मुर्ग़ी की हड्डियों को जम्अ़ कर के अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा कर देना।[1]

﴾2﴿……हज़रते शैख़ अह़मद बिन नस्र ख़ुज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बा'दे शहादत सूली पर तिलावते क़ुरआने करीम करना।[2]

﴾3﴿……शैख़ अबू इस्ह़ाक़ शीराज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बग़दाद में बैठ कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा को देख लेना।[3]

सुवाल क्या सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली हैं और उन से भी करामात का ज़ुहूर हुवा है?

जवाब जी हां…… सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अफ़्ज़लुल औलिया हैं और उन से भी करामात का ज़ुहूर हुवा है।

सुवाल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की चन्द करामात बयान कीजिये।

जवाब ﴾1﴿……अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के रवाना किये गए इस्लामी लश्कर की कलिमए त़य्यिबा की सदा से क़ल्ए़ में ज़ल्ज़ला आना।[4]

❁ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का जनाज़ा ले कर सलाम करने से रौज़ए रसूल का दरवाज़ा खुल जाना।[5]

﴾2﴿……अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ब्र वाले से गुफ़्तगू करना।[6]

---

[١] ……بهجة الاسرار، ص ١٢٨

[٢] ……تاريخ بغداد، ج ٥، ص ٣٨٧

[٣] ……جامع كرامات الاولياء، ج ١، ص ٣٩٢

[٤] ……ازالة الخفاء، مقصد دوم، ج ٣، ص ١٤٨

[٥] ……التفسير الكبير، سورة الكهف، ج ٧، ص ٤٣٣

[٦] ……حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاوليا……الخ، ص ٦١٢

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मदीनए मुनव्वरा عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से सेंकड़ों मील दूर नहावन्द (ईरान) के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तक आवाज़ पहुंचाना ।[1]

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का रुके हुवे दरियाए नील के नाम ख़त़ लिख कर उसे जारी करना ।[2]

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ओं का मक़्बूले बारगाहे इलाही होना ।[3]

﴾3﴿......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से अ़सा मुबारक ले कर तोड़ने वाले के हाथ में केन्सर हो जाना ।[4]

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने मदफ़न की ख़बर देना ।[5]

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़ का आना ।[6]

❁ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन के वक़्त फ़िरिश्तों का हुजूम होना ।[7]

﴾4﴿......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का क़ब्र वालों से सुवाल जवाब करना ।[8]

---

[1] ...... مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، الحدیث: ۵۹۵۴، ج ۲، ص ۴۰۱

[2] ...... حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء . . . الخ، ص ۶۱۲

[3] ...... ازالۃ الخفاء، مقصد دوم، ج ۴، ص ۱۰۸

[4] ...... الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، حرف الجیم، الرقم: ۱۲۴۸، ج ۱، ص ۶۲۲

[5] ...... ازالۃ الخفاء، مقصد دوم، ج ۴، ص ۳۱۵

[6] ...... شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد...... الخ، ص ۲۰۹

[7] ...... المرجع السابق

[8] ...... حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...... الخ، ص ۶۱۳

- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झूटा कहने वाले का अन्धा हो जाना ।[1]
- कौन कहां मरेगा, कहां दफ़्न होगा की ख़बर देना ।[2]
- आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में फ़िरिश्तों का चक्की चलाना ।[3]
- अपनी वफ़ात की ख़बर देना ।[4]
- घोड़े पर सुवार होते हुवे कुरआन ख़त्म कर लेना ।[5]

हया ईमान से है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : हया ईमान से है । (مسند ابی یعلی، الحدیث: ۴۳ ۴۸، ج ۲، ص ۲۹۱) या'नी जिस त़रह़ ईमान मोमिन को कुफ़्र के इर्तिकाब से रोकता है इसी त़रह़ हया बा हया को ना फ़रमानियों से बचाती है । इस की मज़ीद वज़ाह़त व ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी इस रिवायत से होती है : बेशक ह़या और ईमान दोनों आपस में मिले हुवे हैं, जब एक उठ जाए तो दूसरा भी उठा लिया जाता है । (اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحاکِم، الحدیث: ۶۶، ج ۱، ص ۱۷۶)

---

[۱] ......ازالۃ الخفاء، مقصد دوم، ج ۴، ص ۲۹۶

[۲] ......الریاض النضرۃ، الباب الرابع، ج ۲، ص ۲۰۱

[۳] ......المرجع السابق، ص ۲۰۲

[۴] ......المرجع السابق

[۵] ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد......الخ، ص ۲۱۲

वुज़ू का त़रीक़ा

- प्यारे मदनी मुन्नो ! वुज़ू करने के लिये ऊंची जगह क़िब्ला रू बैठना मुस्तह़ब है ।
- वुज़ू करने से क़ब्ल इस त़रह़ निय्यत कीजिये : "हुक्मे इलाही बजा लाने और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से वुज़ू करता हूं ।"
- वुज़ू करने से पहले بِسۡمِ اللّٰهِ पढ़ना सुन्नत है ।
- हो सके तो بِسۡمِ اللّٰهِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰه कह लीजिये कि जब तक वुज़ू बाक़ी रहेगा आप के नामए आ'माल में नेकियां लिखी जाती रहेंगी ।
- अब तीन तीन बार दोनों हाथों को गिट्टों तक धोएं, उंगलियों का ख़िलाल भी कीजिये ।
- सुन्नत के मुत़ाबिक़ मिस्वाक शरीफ़ कीजिये ।
- फिर तीन बार कुल्लियां कीजिये, रोज़ा ना हो तो ग़रग़रा कीजिये ।
- फिर तीन बार नाक में पानी चढ़ाइये रोज़ा ना हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये और उल्टे हाथ की छोटी उंगली से नाक भी साफ़ कीजिये ।
- फिर तीन बार चेहरे को इस त़रह़ धोइये कि पेशानी की जड़ से ठोड़ी तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पानी बह जाए ।
- फिर तीन बार कोहनियों समेत दोनों हाथ इस त़रह़ धोइये कि कोहनियों से नाख़ुन तक कोई जगह धुलने से ना रहे ।

❁……फिर दोनों हाथ तर कर के एक मरतबा पूरे सर का मस्ह़ कीजिये ।

❁……फिर शहादत की उंगली से कानों के अन्दरूनी ह़िस्से का और अंगूठों से बैरूनी ह़िस्से का और हाथों की पुश्त से गरदन का मस्ह़ कीजिये ।

❁……फिर दोनों पैर टख़्नों समेत धोइये, पहले दाएं पैर को फिर बाएं पैर को धोइये, दोनों पैर की उंगलियों के दरमियान बाएं हाथ की छोटी उंगली से ख़िलाल कीजिये ।

❁……दाएं पैर की छोटी उंगली से ख़िलाल शुरूअ़ कर के बाएं पैर की छोटी उंगली पर ख़त्म कीजिये ।

नोट : मदनी मुन्नों को वुज़ू ख़ाने पर वुज़ू की अ़मली तरबिय्यत दीजिये और पानी के इस्ति'माल में इसराफ़ से बचने की तल्क़ीन कीजिये ।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "हर हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह धुल रहे हैं ।"(1)

❁……वुज़ू के बा'द येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ⑵

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे ।

(1)……احياء علوم الدين، كتاب اسرار الطهارة، ج ١، ص ١٨٣

(2)……المرجع السابق، ص ١٨٤

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

हदीसे पाक में है : "जिस ने अच्छी त़रह वुज़ू किया, फिर आसमान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो ।"[1]

वुज़ू के बा'द सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

हदीसे मुबारका में है : "जो वुज़ू करने के बा'द एक मरतबा सूरए क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो दो मरतबा पढ़े तो शुहदा में शुमार किया जाए और जो तीन मरतबा पढ़ेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैदाने मह़शर में उसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रखेगा ।"[2]

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुज़ू के बा'द आसमान की त़रफ़ देख कर सूरए क़द्र पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी ।[3]

धोने की ता'रीफ़

किसी उ़ज़्व को धोने के येह मा'ना हैं कि उस उ़ज़्व के हर ह़िस्से पर कम अज़ कम दो क़त़रे पानी बह जाए । सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की त़रह चुपड़ लेने या एक क़त़रा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे ना इस त़रह वुज़ू होगा और ना ही ग़ुस्ल ।

---

[1] ...... السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، الحدیث: ۹۹۱۲، ج۶، ص۲۵

[2] ...... کنزالعمال، الحدیث: ۲۶۰۸۵، ج۹، ص۱۳۲

[3] ...... مسائل القرآن، ص۲۹۱ روبی پبلی کیشنز لاہور

अज़ान

सुवाल अज़ान किसे कहते हैं?

जवाब मुसलमानों को नमाज़ की तरफ़ बुलाने के लिये एक ख़ास ए'लान को "अज़ान" कहते हैं।

सुवाल क्या अज़ान फ़र्ज़ है?

जवाब जी नहीं ! बल्कि पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ जो जमाअ़त के साथ मस्जिद में अदा की जाए उस के लिये अज़ान सुन्नते मोअक्कदा है।
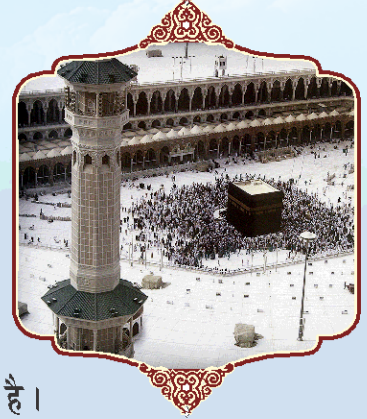
सुवाल क्या अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं?

जवाब जी हां ! अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना सवाब का काम है।

सुवाल जब अज़ान हो तो क्या करना चाहिये?

जवाब अज़ान के एह़तिराम में गुफ़्त्गू और तमाम काम रोक कर अज़ान का जवाब देना चाहिये।

सुवाल अज़ान के अल्फ़ाज़ क्या हैं?

जवाब अज़ान के अल्फ़ाज़ येह हैं :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ   اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ   اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ   حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ   حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

नमाज़ की शराइत़

सुवाल नमाज़ की कितनी शराइत़ हैं ?

जवाब नमाज़ की छे शराइत़ हैं :

﴾1﴿ त़हारत ﴾2﴿ सत्रे औ़रत ﴾3﴿ इस्तिक़्बाले क़िब्ला

﴾4﴿ वक़्त ﴾5﴿ निय्यत ﴾6﴿ तकबीरे तह़रीमा

सुवाल त़हारत से क्या मुराद है ?

जवाब त़हारत से मुराद है कि नमाज़ी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज़ पढ़ रहा है वोह जगह हर क़िस्म की नजासत से पाक हो ।

सुवाल सत्रे औ़रत का क्या मत़लब है ?

जवाब सत्रे औ़रत का मत़लब येह है कि मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत बदन का सारा ह़िस्सा छुपा होना ज़रूरी है । जब कि इस्लामी बहनों के लिये इन पांच आ'ज़ा या'नी मुंह की टिकली, दोनों हथेलियों और दोनों पाउं के तल्वों के इलावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है ।

सुवाल इस्तिक़्बाले क़िब्ला किसे कहते हैं ?

जवाब नमाज़ में क़िब्ला या'नी का'बा की त़रफ़ मुंह करने को इस्तिक़्बाले क़िब्ला कहते हैं ।

सुवाल वक़्त से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि जो नमाज़ पढ़नी है उस का वक़्त होना ज़रूरी है ।

सुवाल निय्यत का क्या मत़लब है?

जवाब निय्यत दिल के पक्के इरादे का नाम है ज़बान से निय्यत करना ज़रूरी नहीं है अलबत्ता दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुवे ज़बान से कह लेना बेहतर है।

सुवाल तकबीरे तह़रीमा से क्या मुराद है?

जवाब नमाज़ शुरूअ़ करने के लिये तकबीर या'नी اَللّٰهُ اَكْبَر कहने को तकबीरे तह़रीमा कहते हैं।

नमाज़ के फ़राइज़

सुवाल नमाज़ के कितने फ़राइज़ हैं?

जवाब नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं :

﴾1﴿ तकबीरे तह़रीमा ﴾2﴿ क़ियाम ﴾3﴿ क़िराअत ﴾4﴿ रुकूअ़
﴾5﴿ सजदा ﴾6﴿ क़ा'दए अख़ीरा ﴾7﴿ ख़ुरूजे बिसुन्इही

सुवाल तकबीरे ऊला से क्या मुराद है?

जवाब तकबीरे तह़रीमा को तकबीरे ऊला भी कहते हैं येह नमाज़ की शराइत़ में आख़िरी शर्त़ और फ़राइज़ में पहला फ़र्ज़ है और इस से मुराद नमाज़ शुरूअ़ करने के लिये तकबीर या'नी اَللّٰهُ اَكْبَر कहना है।

सुवाल क़ियाम किसे कहते हैं?

जवाब तकबीरे तह़रीमा के बा'द सीधा खड़ा होने को क़ियाम कहते हैं, क़ियाम इतनी देर तक है जितनी देर तक क़िराअत है।

सुवाल क़िराअत का क्या मत्लब है ?

जवाब क़िराअत का मत्लब है कि तमाम हुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं आहिस्ता पढ़ने में येह भी ज़रूरी है कि ख़ुद सुन ले ।

सुवाल रुकूअ़ से क्या मुराद है ?

जवाब क़िराअत के बा'द इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाएं रुकूअ़ कहलाता है और येह रुकूअ़ का अदना दरजा है और मर्द के लिये मुकम्मल पीठ सीधी करना रुकूअ़ का कामिल दरजा है ।

सुवाल सजदे से क्या मुराद है ?

जवाब रुकूअ़ के बा'द सात हड्डियों या'नी दोनों हाथ, दोनों पाउं, दोनों घुटनों और नाक की हड्डी को ज़मीन पर लगाना सजदा कहलाता है । सजदे में पेशानी इस त़रह़ जमाएं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो । हर रकअ़त में दो बार सजदा फ़र्ज़ है ।

सुवाल क़ा'दए अख़ीरा से क्या मुराद है ?

जवाब नमाज़ की रकअ़तें पूरी करने के बा'द इतनी देर बैठना कि पूरी तशह्हुद (या'नी पूरी अत्तह़िय्यात) عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तक पढ़ ली जाए, क़ा'दए अख़ीरा कहलाता है और येह भी फ़र्ज़ है ।

सुवाल ख़ुरूजे बिसुन्इही क्या है ?

जवाब क़ा'दए अख़ीरा के बा'द सलाम फेर कर नमाज़ ख़त्म करना ।

नमाज़ का त़रीक़ा

नमाज़ का त़रीक़ा

- बा वुज़ू क़िब्ला रू खड़े हों दोनों हाथ कानों तक ले जाइये।
- जब हाथ उठाएं तो उंगलियां ना मिली हों ना ख़ूब खुली हों और हथेलियां क़िब्ला की त़रफ़ हों।
- फिर जो नमाज़ पढ़ रहे हैं उस की निय्यत कीजिये ज़बान से दोहराना बेहतर है।
- फिर तकबीरे ऊला या'नी اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुवे हाथ नाफ़ के नीचे बांध लीजिये।
- अब सना पढ़िये या'नी :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

- फिर तअ़व्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़िये।
- फिर तस्मिया या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़िये।
- मुकम्मल सूरए फ़ातिहा पढ़िये या'नी :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۠﴿۷﴾

※……सूरए फ़ातिहा पढ़ने के बा'द आहिस्ता आमीन कहिये इस के बा'द तीन छोटी या कोई भी एक बड़ी आयत जो तीन आयात के बराबर हो या कोई भी सूरत पढ़िये मसलन सूरए इख़्लास या'नी :

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ
وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

※……अब اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुवे रुकूअ़ कीजिये और रुकूअ़ की तस्बीह़ या'नी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم तीन या पांच बार पढ़िये।

※……फिर तस्मीअ़ या'नी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ कहते हुवे बिल्कुल सीधे खड़े हो जाइये, इस त़रह़ खड़े होने को क़ौमा कहते हैं।

※……अगर अकेले नमाज़ पढ़ रहे हैं तो اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ भी पढ़िये।

※……फिर اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुवे सजदे में जाइये और पाउं की दसों उंगलियों का रुख़ जानिबे क़िब्ला रहे, फिर सजदे की तस्बीह़ या'नी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى तीन या पांच बार पढ़िये।

※……दोनों सजदों के दरमियान बैठने को "जल्सा" कहते हैं, इस दौरान एक मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهِ कहने की मिक़्दार ठहरिये फिर اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुवे दूसरा सजदा कीजिये।

येह एक रकअ़त पूरी हुई इसी त़रह़ दूसरी रकअ़त भी अदा कीजिये।

- दो रकअ़त के बा'द अत्तह़िय्यात पढ़ने के लिये बैठने को क़ा'दा कहते हैं ।
- क़ा'दा में अब तशह्हुद पढ़िये या'नी

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ
اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى
عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

- जब तशह्हुद में लफ़्ज़े "لا" के क़रीब पहुंचें तो सीधे हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का ह़ल्क़ा बना लीजिये और छोटी उंगली और उस के बराबर वाली उंगली को हथेली से मिला दीजिये ।
- फिर लफ़्ज़े "لا" कहते हुवे कलिमे की उंगली उठाइये और लफ़्ज़े "اِلَّا" पर गिरा कर तमाम उंगलियां सीधी कर लीजिये ।
- अगर ज़ियादा रकअ़तें पढ़ रहे हैं तो اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर दोबारा खड़े हो जाइये ।
- अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हैं तो तीसरी और चौथी रकअ़त के क़ियाम में بِسْمِ اللّٰه और اَلحَمد शरीफ़ भी पढ़िये मगर सूरत न मिलाइये ।
- तमाम रकअ़तें पूरी कर के बैठने को क़ा'दए अख़ीरा कहते हैं ।
- क़ा'दए अख़ीरा में अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूदे इब्राहीमी पढ़िये । या'नी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰۤی اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰی
اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰۤی اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰۤی اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰۤی اِبْرٰهِيْمَ وَ عَلٰۤی اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

❁……फिर कोई दुआए मासूरा पढ़िये । मसलन……

❁ اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ
وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○

❁ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً
وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

❁……इस के बा'द नमाज़ ख़त्म करने के लिये दाएं कन्धे की त़रफ़ मुंह कर के कहिये,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ फिर बाएं कन्धे की त़रफ़ भी मुंह कर के

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहते हुवे सलाम फेरिये ।

ना'त शरीफ़

मदनी मदीने वाले[1]

मुझे दर पे फिर बुलाना मदनी मदीने वाले
मए इश्क़ भी पिलाना मदनी मदीने वाले

मेरी आंख में समाना मदनी मदीने वाले
बने दिल तेरा ठिकाना मदनी मदीने वाले

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना मदनी मदीने वाले

मुझे ग़म सता रहे हैं मेरी जान खा रहे हैं
तुम्हीं हौसला बढ़ाना मदनी मदीने वाले

मैं अगर्चे हूं कमीना तेरा हूं शहे मदीना
मुझे क़दमों से लगाना मदनी मदीने वाले

तेरा तुझ से हूं सुवाली शहा फैरना ना ख़ाली
मुझे अपना तू बनाना मदनी मदीने वाले

येह मरीज़ मर रहा है तेरे हाथ में शिफ़ा है
ऐ तबीब ! जल्द आना मदनी मदीने वाले

तू ही अम्बिया का सरवर तू ही दो जहां का यावर
तू ही रहबरे ज़माना मदनी मदीने वाले

तू ख़ुदा के बा'द बेहतर है सभी से मेरे सरवर
तेरा हाशिमी घराना मदनी मदीने वाले

तेरी फ़र्श पर हुकूमत तेरी अर्श पर हुकूमत
तू शहनशहे ज़माना मदनी मदीने वाले

येह करम बड़ा करम है तेरे हाथ में भरम है
सरे हश्र बख़्शवाना मदनी मदीने वाले

शहा ! ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले

तेरा ग़म ही चाहे अत्तार इसी में रहे गिरिफ़्तार
ग़मे माल से बचाना मदनी मदीने वाले

[1]..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 424 ता 429 मुलतक़तन

मदनी फूल

हाथ मिलाने के मदनी फूल

- दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करना या'नी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है ।[1]
- रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं ।
- अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ह़ा करते हैं और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।[2]
- हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए)
- दो मुसलमान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी और हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी ।
- आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ।[3]

---

[1] ......الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۹

[2] ......مسند ابی یعلی، الحدیث: ۲۹۵۱، ج ۳، ص ۹۵

[3] ......الموطا للامام مالک، کتاب حسن الخلق، الحدیث: ۱۷۳۱، ج ۲، ص ۴۰۷

* फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो मुसलमान अपने भाई से मुसाफ़ह़ा करे और किसी के दिल में दूसरे से अ़दावत न हो तो हाथ जुदा होने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दोनों के गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श देगा और जो कोई अपने मुसलमान भाई की त़रफ़ मह़ब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल या सीने में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।[1]
* जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिलाना मुस्तह़ब है ।[2]
* दोनों त़रफ़ से एक एक हाथ मिलाना सुन्नत नहीं मुसाफ़ह़ा दो हाथ से करना सुन्नत है ।[3]
* बा'ज़ लोग सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं ।[4]
* हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ चूम लेना मकरूह है ।[5]
* मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में कोई चीज़ मसलन रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये ।[6]

---

١ ......كنزالعمال، كتاب الصحبة، الحديث: ٢٥٣٥٨، ج ٩، ص ٥٧

٢ ......ردالمحتار، كتاب الحظر والاباحة، باب الاستبراء وغيره، ج ٩، ص ٦٢٨

٣ ......المرجع السابق، ص ٦٢٩

٤ ......المرجع السابق

٥ ......تبيين الحقائق، كتاب الكراهية، فصل في الاستبراء وغيره، ج ٧، ص ٥٦

٦ ......ردالمحتار، كتاب الحظر والاباحة، باب الاستبراء وغيره، ج ٩، ص ٦٢٩

नाख़ुन काटने के मदनी फूल

- जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना मुस्तह़ब है। अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये।[1]

- सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं कि मन्क़ूल है : जो जुमुआ़ के रोज़ नाख़ुन तरशवाए (काटे) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाए (काटे) तो रह़मत आएगी और गुनाह़ जाएंगे।[2]

- हाथों के नाख़ुन काटने का त़रीक़ा येह है कि पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उल्टे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये। अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए।

- पाउं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये फिर उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलिया समेत नाख़ुन काट लीजिये।[3]

---

١ ……بہارِ شریعت، حصہ١٦، ص٢٢٥
٢ ……المرجع السابق، ص٢٢٦
٣ ……المرجع السابق، ص٢٢٦ تا٢٢٧

- दांत से नाखुन काटना मकरूह है और इस से बर्स या'नी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है।[1]
- नाखुन काटने के बा'द इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी हरज नहीं।
- नाखुन का तराशा (या'नी कटे हुवे नाखुन) बैतुलख़ला या ग़ुस्ल ख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से बीमारी पैदा होती है।[2]
- बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहियें कि बर्स या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तहरीमी है।[3]

जन्नत की बशारत

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : किसी शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ العَزِيز से सख़्त कलामी की। तो आप ने सर झुका लिया और फ़रमाया : क्या तुम येह चाहते हो कि मुझे ग़ुस्सा आ जाए और शैतान मुझे तकब्बुर और हुकूमत के ग़ुरूर में मुब्तला करे और मैं तुम को ज़ुल्म का निशाना बनाऊं और बरोज़े क़ियामत तुम मुझ से इस का बदला लो मुझ से येह हरगिज़ नहीं होगा। येह फ़रमा कर ख़ामोश हो गए।

(کیمیائے سعادت ج ۲ ص ۵۹۷ انتشارات گنجینہ تہران)

---

[1] ......المرجع السابق، ص ۲۲۷

[2] ......بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص ۲۳۱

[3] ......فتاویٰ رضویہ، ج ۲۲، ص ۶۸۵ ملخصا

घर में आने जाने के मदनी फूल

- घर में दाख़िल होने से पहले येह दुआ पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلٰى رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا [1]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुवे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से ही बाहर निकले और हम ने अपने रब पर ही भरोसा किया ।

- निगाहें नीची कर के घर में दाख़िल हों ।
- पहले दायां पाउं रखिये ।
- घर में दाख़िल हों तो पहले सलाम कीजिये ।
- घर से बाहर जाएं तो भी सलाम कीजिये ।
- घर से निकलते वक़्त पहले बायां पाउं बाहर निकालिये ।
- जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ पढ़िये ।

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط [2]

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से (मैं निकलता हूं और) मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की ताक़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है ।

[1]...... سنن ابی داود، کتاب الادب، الحدیث: ٥٠٩٦، ج ٤، ص ٤٢٠

[2]...... سنن ابی داود، کتاب الادب، الحدیث: ٥٠٩٥، ج ٤، ص ٤٢٠

जूते पहनने के मदनी फूल

- जूता पहनने से पहले झाड़ लीजिये ।
- फिर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ कर पहनिये ।
- पहले दाएं पाउं में फिर बाएं पाउं में जूता पहनिये ।
- जूते को पहले बाएं पाउं से फिर दाएं पाउं से उतारिये ।
- एक जूता पहन कर ना चलिये । दोनों पहन लीजिये या दोनों उतार दीजिये ।
- बैठें तो जूते उतार लीजिये ।

लिबास पहनने के मदनी फूल

- सफ़ेद लिबास हर लिबास से बेहतर है ।
- पाजामा टख़्नों से ऊपर रखिये ।
- कपड़े पहनते वक़्त दाईं त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ।
- पहले कुर्ते की दाईं आस्तीन में दायां हाथ दाख़िल कीजिये फिर बाईं आस्तीन में बायां ।
- इसी त़रह़ पहले पाजामे के दाएं पाइंचे में दायां पाउं दाख़िल कीजिये फिर बाएं पाइंचे में बायां ।
- कपड़ों को उतारते वक़्त बाईं त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ।

सुर्मा लगाने के मदनी फूल

"इसमिद" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सुर्मा लगाने के 4 मदनी फूल

- तमाम सुर्मों में बेहतर सुर्मा "इसमिद" है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।[1]
- पथ्थर का सुर्मा इस्ति'माल करने में हरज नहीं और सियाह सुर्मा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं।[2]
- सुर्मा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है।[3]
- सुर्मा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

(1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां।

(2) कभी दाईं आंख में तीन और बाईं में दो।

(3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये।[4]

[1]...... سنن الترمذی، کتاب اللباس، الحدیث: ۱۷۶۳، ج ۳، ص ۲۹۳

[2]...... فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، ج ۵، ص ۳۵۹

[3]...... المرجع السابق، ص ۲۹۴

[4]...... सुन्नतें और आदाब, स. 58

तेल डालने के मदनी फूल

- सर में तेल डालने से पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ें ।

- शीशी दाएं हाथ से पकड़ कर बाएं हाथ में तेल डालिये ।

- दाएं हाथ की उंगली से दाईं और फिर बाईं त़रफ़ के अब्रू पर तेल लगाइये ।

- इस के बा'द दाईं और फिर बाईं पलक पर ।
- फिर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर सर में तेल डालिये ।

कंघा करने के मदनी फूल

- पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़िये ।

- दाईं त़रफ़ से कंघा करना सुन्नत है ।(1)

- पहले दाईं अब्रू पर कंघा कीजिये फिर बाईं अब्रू पर ।

- फिर सर में दाईं त़रफ़ कंघा कीजिये फिर बाईं त़रफ़ ।

1 ...... الشمائل المحمدية للترمذي، باب ماجاء في ترجل رسول الله، الحديث: ٣٣، ص ٤٠

बैतुल ख़ला में आने जाने के मदनी फूल

- बैतुल ख़ला में पहले उल्टा पाउं रखिये ।[1]

- जब तक बैठने के क़रीब न हों कपड़ा बदन से न हटाइये और न ज़रूरत से ज़ियादा खोलिये ।[2]
- खड़े खड़े पेशाब न कीजिये कि ऐसा करना मकरूह है ।[3]

- जिस जगह वुज़ू और ग़ुस्ल किया जाता है वहां पेशाब करना मकरूह है और इस से वस्वसे भी आते हैं ।[4]

- दूध पीते मुन्ने या मुन्नी का पेशाब भी ऐसा ही नापाक है जैसा कि बड़ों का नापाक होता है ।[5]

- सीधे हाथ से इस्तिन्जा करना मकरूह है ।[6]
- कागज़ से इस्तिन्जा करना मन्अ़ है अगर्चे उस पर कुछ भी न लिखा हो ।[7]

---

[1] ......ردالمحتار، كتاب الطهارة، فصل الاستنجاء، مطلب في الفرق بين الاستبراء......الخ، ج ١، ص ٦١٥

[2] ......المرجع السابق

[3] ......فتاوى هنديه، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة واحكامها، الفصل الثالث، ج ١، ص ٥٠

[4] ......الدرالمختار وردالمحتار، ج ١، ص ٦١٣

سنن ابوداود، كتاب الطهارة، باب في البول في المستحم، الحديث: ٢٧، ج ١، ص ٤٤

[5] ......فتاوى هنديه، كتاب الطهارة، الفصل الثانى، ج ١، ص ٤٦

[6] ......المرجع السابق، الفصل الثالث، ج ١، ص ٥٠

[7] ......بهارشريعت، حصه دوم، ج ١، ص ٤١١

मस्जिद के आदाब
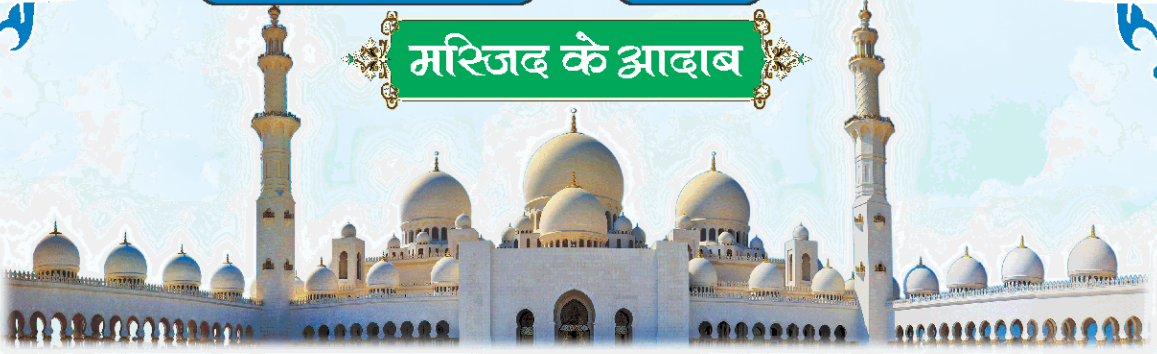
प्यारे मदनी मुन्नो ! मस्जिद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का घर है, इस की ता'ज़ीम बजा लाना सब पर लाज़िम है।

- जब भी मस्जिद में दाख़िल हों तो लिबास, मुंह और बदन पाक व साफ़ और ख़ुश्बूदार हो।
- मस्जिद में बदबूदार लिबास, बदन या मुंह या किसी क़िस्म की बदबूदार चीज़ ले जाना ह़राम है क्यूंकि बदबूदार चीज़ों से फ़िरिश्तों को तकलीफ़ होती है।
- जब भी मस्जिद में दाख़िल हों ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लीजिये। जब तक मस्जिद में रहेंगे कुछ पढ़ें या न पढ़े सवाब मिलता रहेगा।
- मस्जिद में ए'तिकाफ़ की निय्यत के बिग़ैर खाना पीना सोना सह़री व इफ़्त़ार करना मन्अ़ है।
- मस्जिद में हंसना क़ब्र में अन्धेरा लाता है।[1] ज़रूरतन मुस्कुराने में ह़रज नहीं।
- मस्जिद में मुबाह़ बात करना मकरूह और नेकियों को खा जाता है।[2]
- मस्जिद में कूड़ा कर्कट हरगिज़ न फेंकें, मस्जिद में अगर मा'मूली तिन्का या ज़र्रा फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तकलीफ़ होती है जिस क़दर इन्सान को आंख में मा'मूली ज़र्रा पड़ने से होती है।
- जूते उतार कर मस्जिद में ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा अच्छी त़रह़ झाड़ लें इसी त़रह़ पाउं में मिट्टी लगी हो तो रूमाल से साफ़ कर लीजिये।[3]
- मस्जिद में दौड़ना या इतने ज़ोर से क़दम रखना जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।[4]

---

[1] ……ملفوظات اعلیٰ حضرت، حصہ دوم، ص ۳۲۳

[2] ……فتح القدیر، کتاب الصلاۃ، ج ۱، ص ۳۶۹

[3] ……جذب القلوب، ص ۲۵۷

[4] ……ملفوظات اعلیٰ حضرت، حصہ دوم، ص ۳۱۸

प्यारे मदनी मुन्नो ! आदाबे मस्जिद का ख़याल रखते हुवे फ़ुज़ूल गुफ़्तगू और मज़ाक़ मस्ख़री से बचिये और अपनी नेकियों को भी बरबाद होने से बचाइये कि दुन्या की जाइज़ बात भी नेकियों को खा जाती है ।

मुर्शिद के आदाब

फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ से «आदाबे मुर्शिदे कामिल» के बारह हुरूफ़ की निस्बत से 12 आदाब[1]

- मुर्शिद के हुक़ूक़ वालिद के हुक़ूक़ से ज़ाइद हैं ।
- वालिद जिस्मानी बाप है और पीर रूहानी बाप है ।
- पीर की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई भी काम करना मुरीद को जाइज़ नहीं ।
- उन के सामने हंसना मन्अ़ है ।
- उन की इजाज़त के बिग़ैर बात करना मन्अ़ है ।
- जब उन की मजलिस में ह़ाज़िर हों तो दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह होना मन्अ़ है ।
- उन की ग़ैर ह़ाज़िरी में उन के बैठने की जगह बैठना मन्अ़ है ।
- उन की औलाद की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है ।
- उन के बिछौने की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है ।
- उन की चौखट की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है ।
- अपने जान व माल को उन्हीं का समझे ।
- उन से अपना कोई ह़ाल छुपाने की इजाज़त नहीं ।

[1] ......فتاوی رضویہ، ج ۲۶، ص ۵۶۳
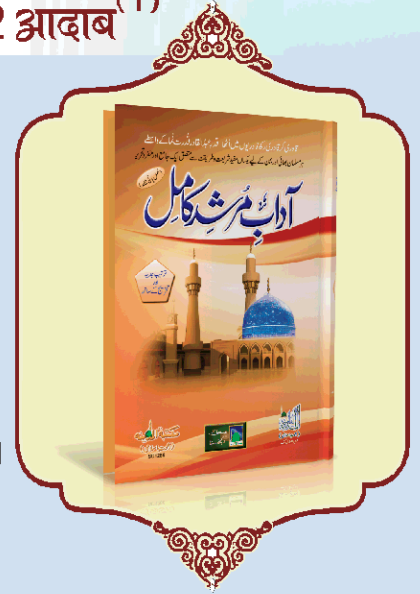
वालिदैन का अदब व एहतिराम

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ किस त़रह़ के सुलूक का हुक्म फ़रमाया है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म फ़रमाया है : चुनान्चे, सूरतुल अ़न कबूत में इर्शाद फ़रमाता है :

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا (پ۲۰، العنکبوت:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की ।

सुवाल ह़दीसे पाक की रोशनी में वालिदैन के अदब व एह़तिराम की फ़ज़ीलत बताइये।

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो नेक औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ मह़ब्बत भरी नज़र से देखती है उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर नज़र के बदले में एक मक़्बूल ह़ज का सवाब तह़रीर फ़रमा देता है ।"(1)

सुवाल मां बाप के लिये कौन सी दुआ़ करते रहना चाहिये ?

जवाब मां बाप के लिये येह दुआ़ करते रहना चाहिये :

رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला ।

सुवाल मां बाप से किस त़रह़ गुफ़्तगू करनी चाहिये ?

जवाब मां बाप से गुफ़्तगू करते वक़्त आवाज़ धीमी और नज़रें नीची रखनी चाहियें उन की मौजूदगी में ऊंची आवाज़ से गुफ़्तगू नहीं करनी चाहिये ।

---

(1) ......مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، الحديث: ۴۹۴۴، ج ۲، ص ۲۰۹

सुवाल हमें मां बाप का किस त़रह़ ख़याल रखना चाहिये ?

जवाब मां बाप बुलाएं तो फ़ौरन जवाब देना चाहिये उन की बात तवज्जोह से सुननी चाहिये, जिस बात का हुक्म दें उस पर अ़मल करना चाहिये और जिस चीज़ से मन्अ़ करें उस से रुक जाना चाहिये।

सुवाल मां बाप के हम पर क्या एह़सानात हैं ?

जवाब मां बाप के हम पर बे शुमार एह़सानात हैं। वोह हमारे खाने, पीने, लिबास, ता'लीम, सिह़्ह़त और दूसरी ज़रूरतों का ख़याल रखते हैं, लिहाज़ा हमें भी उन का ख़ूब एह़तिराम करना चाहिये।

उस्ताद का अदब व एह़तिराम

त़ालिबे इल्म का उस्ताद के साथ इन्तिहाई मुक़द्दस रिश्ता होता है लिहाज़ा त़ालिबे इल्म को चाहिये कि उस्ताद को अपने ह़क़ में ह़क़ीक़ी बाप से बढ़ कर ख़ास जाने क्यूंकि वालिदैन उसे दुन्या की आग और मसाइब से बचाते हैं जब कि उस्ताद उसे नारे दोज़ख़ और मसाइबे आख़िरत से बचाता है।

- अगर्चे किसी उस्ताद से एक ही ह़र्फ़ पढ़ा हो उस की भी ता'ज़ीम बजा लाइये कि ह़दीसे पाक में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी आदमी को क़ुरआने करीम की एक आयत पढ़ाई वोह उस का आक़ा है।"[1]
- उस्ताद की ग़ैर मौजूदगी में भी उन का अदब कीजिये, उन की जगह पर न बैठिये।

1......المعجم الكبير، الحديث:٧٥٢٨، ج٨، ص١١٢

- चलते वक़्त उन से आगे न बढ़िये।
- उस्ताद से झूट बोलना बाइसे महरूमी है लिहाज़ा उस्ताद से हमेशा सच बोलिये।
- उन से निगाह ना मिलाइये बल्कि निगाह नीची रखिये।
- इसी तरह हर नमाज़ के बा'द अपने असातिज़ा और वालिदैन के लिये हमेशा दुआ करते रहिये।
- आप जहां पढ़ते हैं उस मद्रसे के दीगर असातिज़ा जो आप को अगर्चे नहीं पढ़ाते उन का अदब भी लाज़िम जानिये।
- उस्ताद की ना शुक्री से बचिये क्यूंकि येह एक ख़ौफ़नाक बला और तबाहकुन बीमारी है और इल्म की **बरकतों** को ख़त्म कर देती है। चुनान्चे ह़दीसे पाक में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा नहीं किया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं किया।"(1)
- दरजे से बाहर आते जाते उस्ताद साहिब से इजाज़त ज़रूर लीजिये।
- उस्ताद साहिब आप को जो भी जदवल बना कर दें उस पर मद्रसे और घर में अमल कर के वक़्त पर अपने अस्बाक़ सुना कर उस्ताद साहिब के दिल से दुआएं लीजिये।
- उस्ताद की सख़्ती को अपने लिये बाइसे रहमत जानिये। क़ौले मश्हूर है कि "जो उस्ताद की सख़्तियां नहीं झेल सकता उसे ज़माने की सख़्तियां झेलनी पड़ती हैं।"

(1) ......سنن الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في الشكر... إلخ، الحديث: ١٩٦٢، ج٣، ص ٣٨٤

अच्छे और बुरे काम

झूट का बयान

झूट की ता'रीफ़

ख़िलाफ़े वाक़िआ बात करने को "झूट" कहते हैं।[1]

हमारे मुआ़शरे में झूट इतना आ़म हो चुका है कि अब इसे مَعَاذَ الله बुराई ही तसव्वुर नहीं किया जाता। ऐसे ह़ालात में बच्चों का इस से बचना बहुत दुश्वार है। हमें चाहिये कि अपने बच्चों के ज़ेह्न में बचपन ही से झूट के ख़िलाफ़ नफ़रत बिठा दें ताकि वोह बड़े होने के बा'द भी सच बोलने की आ़दत को हर ह़ाल में अपना कर रखें।

झूट की सज़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा झूट बोलता है तो फ़िरिश्ता उस की बद बू से एक मील दूर हो जाता है।[2]

प्यारे मदनी मुन्नो ! देखा आप ने कि झूट की नुहूसत कितनी बुरी है इसी त़रह़ झूट के नुक़्सानात भी बहुत हैं। चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक सफ़र पर जा रहे थे कि रास्ते में एक शख़्स मिला जिस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह के नबी ! मैं आप की सोह़बत में रह कर आप عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत करना और इ़ल्मे शरीअ़त ह़ासिल करना चाहता हूं।

---

[1] ...... حدیقہ ندیہ، ج ۲، ص ۲۰۰

[2] ...... سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، ج ۳، ص ۳۹۲

मुझे भी अपने साथ सफ़र की इजाज़त अ़ता फ़रमा दीजिये। पस आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे इजाज़त अ़ता फ़रमा दी और यूं येह दोनों एक साथ सफ़र करने लगे। चलते चलते रास्ते में एक नह्र के कनारे पहुंचे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आओ खाना खा लें।" दोनों खाना खाने लगे, आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास तीन रोटियां थीं जब दोनों एक एक रोटी खा चुके तो आप عَلَيْهِ السَّلَام नह्र से पानी नोश फ़रमाने लगे। पीछे से उस शख़्स ने तीसरी रोटी छुपा ली। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام पानी पी कर वापस तशरीफ़ लाए तो देखा कि तीसरी रोटी ग़ाइब है, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से पूछा : तीसरी रोटी कहां गई ? उस ने झूट बोलते हुवे कहा : मुझे मा'लूम नहीं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ख़ामोश हो रहे, फिर थोड़ी देर बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : आओ ! आगे चलें।

दौराने सफ़र आप عَلَيْهِ السَّلَام ने रास्ते में एक हिरनी को अपने दो ख़ूबसूरत बच्चों के साथ खड़े देखा तो हिरनी के एक बच्चे को अपनी त़रफ़ बुलाया, वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म पाते ही फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे ज़ब्ह़ किया, भूना और दोनों ने मिल कर उस का गोश्त खाया। गोश्त खाने के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की हड्डियां एक जगह जम्अ़ कीं और फ़रमाया : قُمْ بِاِذْنِ اللهِ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से खड़ा हो जा। तो यकायक हिरनी का वोह बच्चा ज़िन्दा हो गया और फिर अपनी मां के पास चला गया। उस के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : तुझे उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की क़ुदरत अ़ता की ! सच सच बता वोह तीसरी रोटी कहां गई ? वोह बोला : मुझे नहीं मा'लूम। तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : चलो आओ ! आगे चलें।

चलते चलते एक दरिया पर पहुंचे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स का हाथ पकड़ा और पानी के ऊपर चलते हुवे दरिया के दूसरे कनारे पहुंच गए । अब फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : तुझे उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की क़ुदरत अ़ता की ! सच सच बता वोह तीसरी रोटी कहां गई ? इस बार भी उस ने येही जवाब दिया कि मुझे नहीं मा'लूम । तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : आओ ! आगे चलें । चलते चलते एक रेगिस्तान में पहुंच गए जहां हर त़रफ़ रेत ही रेत थी । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने कुछ रेत जम्अ़ की और फ़रमाया : ऐ रेत ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से सोना बन जा । तो वोह रेत फ़ौरन सोना बन गई । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के तीन हिस्से किये और फ़रमाया : एक हिस्सा मेरा, दूसरा तेरा और तीसरा उस का जिस ने वोह रोटी ली । येह सुनते ही वोह शख़्स झट बोल उठा : वोह रोटी मैं ने ही ली थी । येह मा'लूम होने के बा'द हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : येह सारा सोना तुम ही ले लो । बस मेरा और तेरा इतना ही साथ था ।

इतना कहने के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام उस शख़्स को वहीं छोड़ कर आगे रवाना हो गए । वोह इतना ज़ियादा सोना मिल जाने पर बहुत ख़ुश था, जब सारा सोना एक चादर में लपेट कर वापस घर को लौटने लगा तो रास्ते में उसे दो शख़्स मिले जिन्हों ने उस के पास इतना सोना देख कर उसे क़त्ल कर के सारा सोना छीन लेने का इरादा कर लिया । चुनान्चे जब वोह उसे क़त्ल करने के इरादे से आगे बढ़े तो वोह शख़्स जान बचाने की ख़ातिर बोला : तुम मुझे क्यूं क़त्ल करना चाहते हो ? अगर सोना लेना चाहते हो तो हम इस के तीन हिस्से कर लेते हैं और एक एक हिस्सा आपस में बांट लेते हैं । वोह दोनों इस पर राज़ी हो गए । फिर वोह शख़्स बोला कि बेहतर येह है कि हम में से एक आदमी थोड़ा सा सोना ले कर क़रीब के शहर में जाए और खाना ख़रीद लाए ताकि खा पी कर सोना तक़सीम करें ।

पस उन में से एक आदमी शहर पहुंचा, खाना ख़रीद कर वापस होने लगा तो उस ने सोचा : बेहतर येह है कि खाने में ज़हर मिला दूं ताकि वोह दोनों खा कर मर जाएं और सारा सोना मैं ही ले लूं। येह सोच कर उस ने ज़हर ख़रीद कर खाने में मिला दिया। इधर इन दोनों ने येह साज़िश की, कि जैसे ही वोह खाना ले कर आएगा हम दोनों मिल कर उस को मार डालेंगे और फिर सारा सोना आधा आधा बांट लेंगे। चुनान्चे जब वोह शख़्स खाना ले कर आया तो दोनों उस पर पिल पड़े और उस को क़त्ल कर दिया। इस के बा'द ख़ुशी ख़ुशी खाना खाने के लिये बैठे तो ज़हर ने अपना काम कर दिखाया और येह दोनों भी तड़प तड़प कर ठन्डे हो गए और सोना जूं का तूं पड़ा रहा।

कुछ अ़र्से के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का वापसी में वहां से गुज़र हुवा तो क्या देखते हैं कि सोना वहीं मौजूद है और साथ में तीन लाशें भी पड़ी हैं तो येह देख कर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने साथ मौजूद लोगों से फ़रमाया : "देख लो ! दुन्या का येह ह़ाल है, पस तुम पर लाज़िम है कि इस से बचते रहो।"[1]

प्यारे मदनी मुन्नो ! देखा आप ने कि उस शख़्स को झूट और माले दुन्या की मह़ब्बत ने बरबाद कर दिया और ना उसे दौलत मिली और ना ही झूट से कोई फ़ाइदा हुवा बल्कि जान से हाथ धोने के साथ साथ दुन्या व आख़िरत का नुक़्सान भी उठाना पड़ा।

ना मुझ को आज़मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

[1]......اتحاف السادة المتقين، ج ۹، ص ۸۳۵

झूट के मज़ीद नुक्सानात मुलाहज़ा कीजिये

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स की आ़दत थी कि वोह बादशाहों के दरबारों में जाता और उन के सामने अच्छी अच्छी बातें करता, बादशाह ख़ुश हो कर उसे इन्आ़म व इकराम से नवाज़ते और उस की ख़ूब हौसला अफ़्ज़ाई करते। एक मरतबा वोह एक बादशाह के दरबार में गया और उस से इजाज़त चाही कि मैं कुछ बातें अ़र्ज़ करना चाहता हूं। बादशाह ने इजाज़त दी और उसे अपने सामने कुर्सी पर बिठा दिया और कहा अब जो कहना चाहते हो कहो। उस शख़्स ने कहा : "एह़सान करने वाले के साथ एह़सान कर और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे ख़ुद ही मिल जाएगा।" बादशाह उस की येह बात सुन कर बहुत ख़ुश हुवा और उसे इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा। येह देख कर बादशाह के एक दरबारी को उस शख़्स से ह़सद हो गया और दिल ही दिल में कुढ़ने लगा कि इस आ़म से शख़्स को बादशाह के दरबार में इतनी इ़ज़्ज़त और इतना मक़ाम क्यूं ह़ासिल हो गया ! बिल आख़िर ह़सद की बीमारी से मजबूर हो कर बादशाह के पास गया और बड़े ख़ुशामदाना अन्दाज़ में झूट बोलते हुवे कहा : "बादशाह सलामत ! अभी जो शख़्स आप के सामने गुफ़्तगू कर के गया है अगर्चे उस की बातें अच्छी हैं लेकिन वोह आप से नफ़रत करता है और कहता है कि बादशाह को गन्दा दह्नी (या'नी मुंह से बद बू आने) का मरज़ लाह़िक़ है।" बादशाह ने येह सुन कर पूछा : तुम्हारे पास क्या सुबूत है कि वोह मेरे बारे में ऐसा गुमान रखता है ? वोह ह़ासिद बोला : हुज़ूर ! अगर आप को मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता तो आप आज़मा कर देख लें उसे अपने पास बुलाएं जब वोह आप के क़रीब आएगा तो अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ताकि उसे आप के मुंह की बद बू ना आए। येह सुन कर बादशाह ने कहा : तुम जाओ जब तक मैं इस मुआ़मले की ख़ुद तह़क़ीक़ न कर लूं इस के बारे में कोई फ़ैसला नहीं करूंगा।

पस वोह हासिद दरबारे शाही से चला आया और उस शख़्स के पास पहुंचा और उसे खाने की दा'वत दी । उस ने क़बूल कर ली और उस के साथ चल दिया । हासिद ने उसे जो खाना खिलाया उस में बहुत ज़ियादा लहसन डाल दिया । अब उस शख़्स के मुंह से लहसन की बद बू आने लगी । बहर हाल वोह दा'वत से फ़ारिग़ हो कर अपने घर आ गया । अभी थोड़ी देर ही गुज़री थी कि बादशाह का क़ासिद आया और उस ने कहा कि बादशाह ने आप को अभी दरबार में बुलाया है । वोह क़ासिद के साथ दरबार में पहुंचा । बादशाह ने उसे अपने सामने बिठाया और कहा हमें वोही कलिमात सुनाओ जो तुम सुनाया करते हो । उस ने कहा : "एह़सान करने वाले के साथ एह़सान कर और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे ख़ुद ही मिल जाएगा ।" जब उस ने अपनी बात मुकम्मल कर ली तो बादशाह ने कहा मेरे क़रीब आओ । वोह बादशाह के क़रीब गया तो उस ने फ़ौरन अपने मुंह पर हाथ रख लिया ताकि लहसन की बद बू से बादशाह को तकलीफ़ ना हो । जब बादशाह ने येह सूरते ह़ाल देखी तो अपने दिल में कहा कि उस शख़्स ने ठीक ही कहा था कि मेरे बारे में येह शख़्स गुमान रखता है कि मुझे गन्दा दहनी की बीमारी है । बादशाह उस शख़्स के बारे में बदगुमानी का शिकार हो गया और बिला तह़क़ीक़ फ़ैसला कर लिया कि इस शख़्स को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये । चुनान्चे उस ने अपने गवर्नर के नाम इस त़रह़ ख़त़ लिखा : ऐ गवर्नर ! जैसे ही येह शख़्स तुम्हारे पास मेरा ख़त़ ले कर पहुंचे इसे ज़ब्ह़ कर देना और इस की खाल में भूसा भर के मेरे पास भिजवा देना । फिर बादशाह ने ख़त़ पर मोहर लगाई और उस शख़्स को देते हुवे कहा येह ख़त़ ले कर फ़ुलां अ़लाक़े के गवर्नर के पास जाओ ।

उस बादशाह की येह आ़दत थी कि जब भी वोह किसी को कोई बड़ा इन्आ़म देना चाहता तो किसी गवर्नर के नाम ख़त़ लिखता और उस शख़्स को गवर्नर के पास भेज देता वहां उसे ख़ूब इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा जाता । कभी भी बादशाह ने सज़ा के लिये किसी को ख़त़ नहीं लिखा था । आज पहली बार बादशाह ने किसी को सज़ा देने के लिये येह त़रीक़ा इख़्तियार किया ।

बहर हाल वोह शख़्स ख़त् ले कर दरबार से निकला तो वोह ह़ासिद राह में मुन्तज़िर था कि देखो क्या होता है जब उसे आता देखा तो पूछा कि क्या हुवा ? कहां का इरादा है ? उस ने कहा मैं ने बादशाह को अपना कलाम सुनाया तो उस ने मुझे एक ख़त् मोहर लगा कर दिया और कहा कि फ़ुलां गवर्नर के पास येह ख़त् ले जाओ अब मैं उसी गवर्नर के पास जा रहा हूं। ह़ासिद कहने लगा : भाई ! येह ख़त् मुझे दे दो मैं इसे गवर्नर तक पहुंचा दूंगा। चुनान्चे, उस शरीफ़ आदमी ने वोह ख़त् ह़ासिद के ह़वाले कर दिया। ह़ासिद ख़त् ले कर ख़ुशी ख़ुशी गवर्नर के दरबार की त़रफ़ चल पड़ा और रास्ते में सोचता जा रहा था कि मेरी क़िस्मत कितनी अच्छी है कि मैं ने इस शख़्स को बे वुक़ूफ़ बना कर इन्आ़म वाला ख़त् ले लिया अब मुझे ही इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा जाएगा और मैं माला माल हो जाऊंगा। इन्हीं सोचों में गुम ह़ासिद झूमता झूमता आगे बढ़ रहा था लेकिन वोह नहीं जानता था कि वोह अपने इब्रतनाक अन्जाम की त़रफ़ बढ़ रहा है।

जब वोह गवर्नर के पास पहुंचा और बड़े मोअद्दबाना अन्दाज़ में बादशाह का ख़त् गवर्नर को दिया और गवर्नर ने जैसे ही ख़त् पढ़ा तो पूछा : ऐ शख़्स ! क्या तुझे मा'लूम है कि इस ख़त् में बादशाह ने क्या लिखा है ? उस ने कहा : जनाब ! येही लिखा होगा कि मुझे इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा जाए। गवर्नर ने कहा : ऐ नादान शख़्स ! इस ख़त् में मुझे हुक्म दिया गया है कि जैसे ही तुम पहुंचो मैं तुम्हें ज़ब्ह़ कर के तुम्हारी खाल में भूसा भर कर तुम्हारी लाश बादशाह की त़रफ़ रवाना कर दूं। येह सुन कर ह़ासिद के होश उड़ गए और वोह कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! येह ख़त् मेरे बारे में नहीं लिखा गया बल्कि येह तो फ़ुलां शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ है, बेशक आप बादशाह के पास किसी क़ासिद को भेज कर मा'लूम कर लें। गवर्नर ने उस की एक ना सुनी और कहा : हमें कोई ह़ाजत नहीं कि हम बादशाह से इस मुआ़मले की तस्दीक़ करें, बादशाह की मोहर इस ख़त् पर मौजूद है, लिहाज़ा हमें बादशाह के हुक्म पर अ़मल करना ही होगा। इतना कहने के बा'द उस ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इस (ह़ासिद) को ज़ब्ह़ कर के इस की खाल उतार लो और इस में भूसा भर दो। फिर उस की लाश को बादशाह के पास भिजवा दिया गया।

इधर दूसरे दिन वोह नेक शख़्स ह़स्बे मा'मूल दरबार में गया और बादशाह के सामने खड़े हो कर वोही कलिमात दोहराए कि "एह़सान करने वाले के साथ एह़सान कर और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे ख़ुद ही मिल जाएगा।" जब बादशाह ने उसे सह़ीह़ व सालिम देखा तो पूछा : मैं ने तुझे जो ख़त़ दिया था उस का क्या हुवा ? उस ने जवाब दिया : मैं आप का ख़त़ ले कर गवर्नर के पास जा रहा था कि रास्ते में मुझे फ़ुलां शख़्स मिला और उस ने मुझ से कहा कि येह ख़त़ मुझे दे दो। मैं ने उसे वोह ख़त़ दे दिया और वोह ले कर गवर्नर के पास चला गया। बादशाह ने कहा : उस शख़्स ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था कि तुम मेरे मुतअ़ल्लिक़ येह गुमान रखते हो कि मेरे मुंह से बद बू आती है, क्या वाक़ेई ऐसा है ? उस शख़्स ने कहा : बादशाह सलामत ! मैं ने कभी भी आप के बारे में ऐसा नहीं सोचा। तो बादशाह ने पूछा : जब मैं ने तुझे अपने क़रीब बुलाया था तो तूने अपने मुंह पर हाथ क्यूं रख लिया था ? उस ने जवाब दिया : बादशाह सलामत ! आप के दरबार में आने से कुछ देर पहले उस शख़्स ने मेरी दा'वत की थी और खाने में मुझे बहुत ज़ियादा लहसन खिला दिया था जिस की वजह से मेरा मुंह बदबू दार हो गया जब आप ने मुझे अपने क़रीब बुलाया तो मैं ने येह गवारा ना किया कि मेरे मुंह की बद बू से बादशाह सलामत को तकलीफ़ पहुंचे, इसी लिये मैं ने मुंह पर अपना हाथ रख लिया था।

जब बादशाह ने येह सुना तो कहा : ऐ ख़ुश नसीब ! तूने बिल्कुल ठीक कहा तेरी येह बात बिल्कुल सच्ची है कि जो किसी के साथ बुराई करता है उसे अ़न क़रीब उस की बुराई का बदला मिल जाएगा। उस शख़्स ने तेरे साथ बुराई का इरादा किया और झूट बोला और तुझे सज़ा दिलवाना चाही लेकिन उसे अपने झूट बोलने का सिला ख़ुद ही मिल गया।

सच है कि जो किसी के लिये गढ़ा खोदता है वोह ख़ुद ही उस में जा गिरता है।

ऐ नेक शख़्स ! मेरे सामने बैठ और अपनी उस बात को दोहरा । चुनान्चे वोह शख़्स बादशाह के सामने बैठा और कहने लगा : "एह्सान करने वाले के साथ एह्सान कर और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे ख़ुद ही मिल जाएगा ।"

प्यारे मदनी मुन्नो !

- जो किसी पर एह्सान करता है उस पर भी एह्सान किया जाता है और जो किसी के लिये बुरा चाहता है उस के साथ बुरा ही मुआमला होता है ।
- जो झूट बोल कर दूसरों की तबाही व बरबादी चाहता है वोह ख़ुद तबाह व बरबाद हो जाता है ।
- अच्छे काम का अच्छा नतीजा और बुरे काम का बुरा नतीजा ।
- जैसी करनी वैसी भरनी ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें झूट जैसी बीमारी से मह्फ़ूज़ फ़रमाए !

آمین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की ब दौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है :

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ (پ۱۷، الانبیاء:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि हम हक़ को बातिल पर फेंक मारते हैं तो वोह उस का भेजा निकाल देता है ।

सच की बरकत

प्यारे मदनी मुन्नो ! एक मदनी मुन्ने ने अपनी मां की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरी प्यारी अम्मी जान ! मुझे रिज़ाए रब्बुल अनाम के लिये राहे ख़ुदा में वक़्फ़ कर दीजिये और मुझे बग़दाद शरीफ़ जा कर इल्मे दीन ह़ासिल करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर उन का फ़ैज़ान ह़ासिल करने की इजाज़त अ़ता फ़रमाइये ।" तो उस मदनी मुन्ने की वालिदए माजिदा ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत व रिज़ा पर लब्बैक कहा और राहे ख़ुदा के उस नन्हे मुसाफ़िर के लिये ज़ादे राह तय्यार करना शुरूअ़ कर दिया और चालीस दीनार अपने लख़्ते जिगर की क़मीस के अन्दर सी दिये । फिर सफ़र पर रवाना होने से पहले अपने लख़्ते जिगर से वा'दा लिया कि हमेशा और हर ह़ाल में सच बोलना, फिर उस अ़ज़ीम मां ने रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल की ख़ातिर अपने बेटे को येह कहते हुवे अल वदाअ़ कहा : "जाओ ! मैं ने तुम्हें राहे ख़ुदा में हमेशा के लिये वक़्फ़ कर दिया, अब मैं येह चेहरा क़ियामत से पहले ना देखूंगी ।"

पस राहे ख़ुदा का येह नन्हा मुसाफ़िर इल्मे दीन ह़ासिल करने के जज़्बे से सरशार और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की मह़ब्बत को सीने से लगाए एक क़ाफ़िले के हमराह सूए बग़दाद चल पड़ा, रास्ते में साठ डाकू क़ाफ़िले का रास्ता रोक कर लूट मार करने लगे, उन्हों ने किसी को भी ना छोड़ा और हर एक से उस का माल व असबाब छीन लिया मगर उस मदनी मुन्ने को कम उ़म्र जानते हुवे किसी ने कुछ भी ना कहा, फिर एक डाकू ने पास से गुज़रते हुवे वैसे ही पूछा : ऐ मदनी मुन्ने ! क्या तुम्हारे पास भी कुछ है ? मदनी मुन्ने ने बे धड़क जवाब दिया : जी हां ! मेरे पास चालीस दीनार हैं । डाकू ने मज़ाक़ समझा और आगे चल दिया ।

इसी त़रह़ एक और डाकू ने भी उस मदनी मुन्ने के पास से गुज़रते हुवे पूछा तो उसे भी मदनी मुन्ने ने येही जवाब दिया कि मेरे पास चालीस दीनार हैं। जब येह दोनों डाकू अपने सरदार के पास गए तो उसे बताया कि क़ाफ़िले में एक ऐसा निडर मदनी मुन्ना है जो इस ह़ाल में भी मज़ाक़ कर रहा है।

सरदार ने मदनी मुन्ने को बुलाने का कहा, वोह आया तो उस ने पूछने पर अब भी वोही जवाब दिया जो पहले दिया था। सरदार ने तलाशी ली तो वाक़ेई चालीस दीनार मिल गए। मदनी मुन्ने के इस सच बोलने पर सब ह़ैरान हुवे और उस से सच बोलने का सबब पूछा तो मदनी मुन्ने ने जवाब दिया कि मेरी मां ने घर से निकलते हुवे वा'दा लिया था **हमेशा और हर ह़ाल में सच बोलना, कभी झूट ना बोलना** और मैं अपनी मां से किये हुवे वा'दे को नहीं तोड़ सकता। डाकूओं का सरदार मदनी मुन्ने की येह बात सुन कर रोने लगा और कहने लगा : हाए अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! येह मदनी मुन्ना अपनी मां से किया हुवा वा'दा इस त़रह़ पूरा कर रहा है और एक मैं हूं कि कई सालों से अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये गए वा'दे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर रहा हूं। पस उस सरदार ने रोते हुवे राहे ख़ुदा के उस नन्हे मुसाफ़िर के हाथ पर तौबा कर ली और उस के बाक़ी साथी भी येह कहते हुवे ताइब हो गए कि ऐ सरदार ! जब बुराई की राह पर तू हमारा सरदार था तो अब नेकी की राह पर भी तू ही हमारा रहनुमा होगा।[1]

प्यारे मदनी मुन्नो ! क्या आप जानते हैं कि राहे ख़ुदा का येह नन्हा मुसाफ़िर कौन था ? येह कोई और नहीं बल्कि हमारे **प्यारे प्यारे मुर्शिद, हुज़ूर ग़ौसे पाक, शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی** थे। जिन्हों ने अभी राहे ख़ुदा में सफ़र का आग़ाज़ ही किया

---

[1] ......بهجة الاسرار، ذكر طريقه رحمة الله تعالى عليه، ص١٦٧

था कि इस नन्ही सी उ़म्र में सिर्फ़ मां से किए हुवे वा'दे की लाज निभाने की बरकत से साठ डाकूओं ने आप के हाथ पर तौबा कर ली। तो ज़रा सोचिये : अगर बन्दा अपने रब से किये हुवे वा'दे की पासदारी करने लगे तो किस मर्तबे पर फ़ाइज़ होगा। पस येही वजह है कि मां से जो वा'दा कर के आए थे कि हमेशा सच बोलेंगे और सच ही का बोल बाला करेंगे उस सच की बरकत से जब आप का शोहरा आ़म हुवा तो हज़ारों नहीं बल्कि लाखों राहे ह़क़ से भटके हुवे लोग राहे रास्त पर आ गए और हर छोटे बड़े ने ना सिर्फ़ आप की विलायत का ए'तिराफ़ किया बल्कि आप को अपने सर का ताज भी समझा।

वहां सर झुकाते हैं सब ऊंचे ऊंचे
जहां है तेरा नक़्शे पा ग़ौसे आ'ज़म

झूट और ख़ुदा की नाराज़ी

प्यारे मदनी मुन्नो ! झूट के बे शुमार नुक़्सानात में से एक नुक़्सान येह भी है कि झूट बोलने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो जाता है। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ (پ۳، ال عمران:٦١)

तर्जमा : झूटों पर अल्लाह की ला'नत।

एक बुज़ुर्ग ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू सईद ! मैं ने रह़ीम व करीम परवर दगार की ना फ़रमानी की तो उस ने मुझे बीमारी में मुब्तला कर दिया। मैं ने शिफ़ा त़लब की तो उस ने शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई।

मैं ने फिर नाफ़रमानी की तो दोबारा बीमारी में मुब्तला हो गया। फिर गुनाहों की मुआफ़ी त़लब की और सिह़्ह़तयाबी की दुआ मांगी। उस पाक परवर दगार ने मुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी। मैं इसी त़रह़ गुनाह करता रहा और वोह मुआफ़ करता रहा। पांचवीं मरतबा बीमार हुवा तो मैं ने इस मरतबा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से गुनाहों की मुआफ़ी त़लब की और सिह़्ह़तयाबी के लिये अ़र्ज़ की तो अपने घर के कोने से येह ग़ैबी आवाज़ सुनी : "तेरी दुआ व मुनाजात क़बूल नहीं हम ने तुझे कई मरतबा आज़माया मगर हर बार तुझे झूटा पाया।"[1]

झूट निफ़ाक़ की अ़लामत है

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें हैं :

﴾1﴿......जब बात करे तो झूट बोले।

﴾2﴿......जब वा'दा करे तो पूरा ना करे।

﴾3﴿......जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे।

अगर्चे वोह नमाज़ पढ़ता हो, रोज़े रखता हो और अपने आप को मुसलमान समझता हो।[2] मुफ़स्सीरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक जगह फ़रमाते हैं कि "झूट तमाम गुनाहों की जड़ है।"[3]

---

[1] ......عیون الحکایات، ج ۲، ص ۲۳ ملخصاً

[2] ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، الحدیث: ۵۹، ص ۵۰

[3] ......مراٰۃ المناجیح، ج ۶، ص ۴۲۷

गाली देने की सज़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿۳﴾ (پ۱۸، المؤمنون:۱ تا ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ों में गिड़गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते ।

प्यारे मदनी मुन्नो ! देखा आप ने ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अच्छी बातें करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और बुरी बातें करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता, मगर बद क़िस्मती से आज कल गाली गलोच और गन्दी बातें बहुत ज़ियादा आ़म हो चुकी हैं, बच्चा हो या बड़ा, मर्द हो या औ़रत इस बुरी आ़दत में मुब्तला नज़र आता है । बल्कि अब तो गालियां देना लोगों का तकयए कलाम बन गया है कि बात बात पर गाली दी जाती है और आह ! अब तो लोगों के ज़मीर इस क़दर मुर्दा हो चुके हैं कि वोह एक दूसरे को गन्दी गन्दी गालियां देते हुवे हंसते हैं और इसी त़रह़ ग़ुस्से के वक़्त भी गाली गलोच करना आ़म हो गया है । या'नी अब तो वोह दौर आ गया कि हंसी मज़ाक़ में भी गालियां बकी जाती हैं और ग़ुस्से के वक़्त भी ।

प्यारे मदनी मुन्नो ! गाली देना बहुत बुरी बात है क्या आप में से कोई येह जुरअत करेगा कि अपने पीर, उस्ताद या वालिद या किसी मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स के सामने गाली बके, हरगिज़ नहीं ! तो ज़रा सोचिये कि हमारा मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें हर आन देख रहा है और हमारी बातें भी सुन रहा है बल्कि वोह तो हम से हमारी शह रग से भी ज़ियादा क़रीब है तो फिर गालियां बकने और गन्दी बातें करते वक़्त हमें येह एह़सास क्यूं नहीं रहता । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْكَافِى निहायत कम गुफ़्त्गू करते और अपने दोस्तों को फ़रमाते : तुम ग़ौर करो कि अपने आ'माल नामों में क्या लिखवा रहे हो ? क्यूंकि वोह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ के सामने पेश होंगे तो जो शख़्स बुरी बातें करता है उस पर अफ़्सोस है। अगर अपने दोस्त को कुछ लिखवाते हुवे कभी उस में बुरे अल्फ़ाज़ लिखवाओ तो येह उस के साथ तुम्हारी बे ह़याई तसव्वुर होगी फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ तुम्हारा क्या बरताव है ?

प्यारे मदनी मुन्नो ! गालियां देते वक़्त हमें इस बात का एह़सास नहीं होता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मा'सूम फ़िरिश्ते हमारी हर बात लिख रहे हैं तो जब हमारी ज़बान से निकली हुई गालियां और बे शर्मी व बे ह़याई की बातें उन्हें लिखना पड़ती होंगी तो उन्हें किस क़दर तकलीफ़ होती होगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि इन्सान पर तअ़ज्जुब है कि किरामन कातिबीन उस के पास हैं और उस की ज़बान उन का क़लम और उस का लुआ़ब उन की सियाही है, फिर भी बेहूदा कलाम करता है।(1)

प्यारे मदनी मुन्नो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़हर व ग़ज़ब से हर दम पनाह मांगते रहिये और ऐसी बातों से मुकम्मल परहेज़ कीजिये जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है। हमेशा अच्छी अच्छी बातें कीजिये क्यूंकि मदीने के ताजदार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश्बूदार है : "बिला शुबा बन्दा कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पसन्द का कोई ऐसा कलिमा कह देता है कि जिस की त़रफ़ उस का ध्यान भी नहीं होता और उस की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बहुत से दरजात बुलन्द फ़रमा देता है और बिला शुबा बन्दा कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का कोई ऐसा कलिमा कह गुज़रता है कि उस की त़रफ़ उस को ध्यान भी नहीं होता और इस की वजह से दोज़ख़ में गिरता चला जाता है।"(2)

---

١ ......تنبیہ المغترین، الباب الثالث، ص ۱۹۰

٢ ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الادب، الحدیث: ۴۸۱۳، ج ۲، ص ۱۸۹

प्यारे मदनी मुन्नो ! हमें अपनी ज़बान को क़ाबू में रखना चाहिये, गाली गलोच, बे ह़याई व बेशर्मी की बातों से गुरेज़ करना चाहिये ताकि आख़िरत में हम नजात पा जाएं । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : मैं बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : नजात क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और तुम्हारा घर तुम्हारे लिये गुन्जाइश रखे (या'नी बेकार इधर उधर ना जाओ) और अपनी ख़त़ा पर रोया करो ।(1)

प्यारे मदनी मुन्नो ! आइये अब गाली देने की शरई ह़ैसिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ जानते हैं :

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक गालियां देने वाले की क्या ह़ैसिय्यत है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गालियां देने वाले को ना पसन्द फ़रमाता है और अपना दुश्मन जानता है ।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गाली देने वाले के बारे में क्या इर्शाद फ़रमाया ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़ोह़्श गोई (या'नी गाली गलोच व बेहूदा बातें) करने वाले पर जन्नत ह़राम है ।''(2)

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन को जब कोई गाली देता तो वोह उस के साथ क्या सुलूक करते थे ?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन को जब कोई गालियां देता तो वोह ग़ुस्सा ना करते बल्कि उस के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमाते और ह़ुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करते ।

प्यारे मदनी मुन्नो ! बद क़िस्मती से आज कल हमारा मुआ़मला बिल्कुल उलट नज़र आता है आज अगर हमें कोई बुरा भला कह दे तो हम ग़ुस्से से लाल पीले हो जाते हैं और ख़ूब औल फ़ौल बकते हैं बल्कि बसा अवक़ात नौबत लड़ाई झगड़े तक जा पहुंचती है । ऐ काश ! इन बुज़ुर्गाने दीन के त़ुफ़ैल हम सरापा अख़्लाक़ बन जाएं

---

[1] ...... سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء في حفظ اللسان، الحدیث: ۲۴۱۴، ج۴، ص ۱۸۲

[2] ...... موسوعۃ الامام ابن ابي الدنیا، الصمت وآداب اللسان، الحدیث: ۳۲۵، ج۷، ص ۲۰۴

अपनी ज़ात के लिये गुस्सा करने और गालियां देने की आदत ख़त्म हो जाए और हमेशा नर्मी से काम लें क्यूंकि

है फ़लाह़ व कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

सुवाल गाली देने का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब गाली देना ना जाइज़ व गुनाह है।

सुवाल लड़ाई झगड़े में गालियां देना कैसा है ?

जवाब लड़ाई झगड़े में गालियां देना मुनाफ़िक़ की अ़लामत है।

सुवाल बा'ज़ बच्चे जब आपस में लड़ पड़ें तो एक दूसरे पर ला'नत भेजते हैं इस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब अव्वल तो लड़ना झगड़ना बहुत बुरी बात है और फिर किसी मुसलमान पर ला'नत भेजना ना जाइज़ व गुनाह है ह़दीसे पाक में है कि मोमिन पर ला'नत भेजना, उसे क़त्ल करने की त़रह़ है।(1)

सुवाल क्या गालियां देने, बे ह़याई व बे शर्मी की बातें करने से दिल सख़्त हो जाता है ?

जवाब जी हां ! गालियां बकने, बेह़याई व बेशर्मी की बातें करने से दिल सख़्त हो जाता है और बदन सुस्त रहता है, नीज़ रिज़्क़ में तंगी होती है।

सुवाल बा'ज़ लोग ज़माने को बुरा भला कहते हैं इस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब ज़माने को बुरा कहना ऐसा है जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बुरा कहना। लिहाज़ा ज़माने को बुरा नहीं कहना चाहिये।

---

[1] ......المعجم الكبير، الحديث: ١٣٣٠، ج ٢، ص ٧٣

ना'त शरीफ़

क़िस्मत मेरी चमकाइये

क़िस्मत मेरी चमकाइये चमकाइये आक़ा
मुझ को भी दरे पाक पे बुलवाइये आक़ा

सीने में हो का'बा तो बसे दिल में मदीना
आंखों में मेरी आप समा जाइये आक़ा

बेताब हूं बेचैन हूं दीदार की ख़ातिर
तड़पाएं ना अब ख़्वाब में आ जाइये आक़ा

हर सम्त से आफ़ात व बलिय्यात ने घेरा
मजबूर की इमदाद को अब आइये आक़ा

सकरात का आ़लम है शहा दम है लबों पर
तशरीफ़ सिरहाने मेरे अब लाइये आक़ा

वह़शत है अन्धेरा है मेरी क़ब्र के अन्दर
आ कर ज़रा रौशन इसे फ़रमाइये आक़ा

मुजरिम को लिये जाते हैं अब सूए जहन्नम
लिल्लाह ! शफ़ाअ़त मेरी फ़रमाइये आक़ा

अ़त्तार पर हो बहरे रज़ा इतनी इनायत
वीरानए दिल आ के बसा जाइये आक़ा

मुबारक इस्लामी महीने

﴾1﴿...... मुहर्रमुल ह़राम

मुहर्रमुल ह़राम इस्लामी साल का पहला महीना है और इस माहे मुबारक को बहुत सी निस्बतें ह़ासिल हैं इस माह की दस तारीख़ को यौमे आ़शूरा कहते हैं। येह दिन नवासए रसूल, मज़्लूमे करबला, इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का यौमे शहादत है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को 10 मुहर्रमुल ह़राम सि. हि. 61 को मैदाने करबला में आप के रुफ़क़ा समेत शहीद कर दिया गया। दुन्या भर में आ़शिक़ाने रसूल शबे आ़शूरा को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के ईसाले सवाब के लिये इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इनइ़क़ाद करते हैं और नियाज़ वग़ैरा का भी एहतिमाम करते हैं।

﴾2﴿...... सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को आ़शिक़ाने रसूल दुन्या भर में अ़क़ीदत व एह़तिराम से सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن का उ़र्स मनाते हैं। और 28 तारीख़ को ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़ेसानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی का उ़र्स मनाया जाता है।

﴾3﴿...... रबीउ़ल अव्वल

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 12 रबीउ़ल अव्वल को सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या में जल्वागर हुवे, दुन्या भर में

आशिक़ाने रसूल इस दिन मदनी जुलूस में शिर्कत करते हैं और बारहवीं शब इजतिमाए मीलाद में शिर्कत कर के सुब्हे सादिक़ के वक़्त सुब्हे बहारां का अश्कबार आंखों से इस्तिक़बाल करते हैं।

﴾4﴿......रबीउ़स्सानी

इस मुबारक महीने को सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से निस्बत ह़ासिल है। 11 वीं शब को आशिक़ाने रसूल सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईसाले सवाब और लंगरे ग़ौसिया का एहतिमाम फ़रमाते हैं। सरकारे बग़दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे मुबारक बग़दादे मुअ़ल्ला (इराक़) में वाक़ेअ़ है।

﴾5﴿......जुमादल ऊला

7 जुमादल ऊला को आशिक़ाने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना शाह रुक्ने आ़लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم का और 17 को शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का उ़र्स मुबारक इन्तिहाई अ़क़ीदत व एह़तिराम से मनाते हैं।

﴾6﴿......जुमादल उख़रा

22 जुमादल उख़रा को आ़शिक़े अक्बर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमाया, इस दिन आशिक़ाने रसूल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की याद में ईसाले सवाब का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते हैं।

﴾7﴿...... रजबुल मुरज्जब

रजबुल मुरज्जब की 27 वीं शब को हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आसमानों की सैर को तशरीफ़ ले गए और अपने रब عَزَّوَجَلَّ का भी सर की आंखों से दीदार किया। इस शब को शबे मे'राज कहते हैं और येह इन्तिहाई मुक़द्दस रात है।

﴾8﴿......शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के बारे में मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि येह मेरा महीना है इस मुबारक माह की 15 वीं शब को शबे बराअत कहते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस शब में तजल्ली फ़रमाता है और जो तौबा करते हैं उन को बख़्श देता है और जो रह़मत त़लब करते हैं उन पर रह़्म फ़रमाता है लिहाज़ा इस शब आतश बाज़ी व दीगर ह़राम कामों से बचना चाहिये और ख़ूब इबादत कर के अपने रब को राज़ी करना चाहिये।

﴾9﴿......रमज़ानुल मुबारक

रमज़ानुल मुबारक को अल्लाह का महीना कहा जाता है और इस में रोज़े रखे जाते हैं। माहे रमज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है। इस महीने में अज्रो सवाब बहुत ही बढ़ जाता है। नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है बल्कि इस महीने में तो रोज़ादार का सोना भी इबादत में शुमार किया जाता है।

﴾10﴿ ……शव्वालुल मुकर्रम

यकुम शव्वालुल मुकर्रम को दुन्या भर में आ़शिक़ाने रसूल ईदुल फ़ित्र मनाते हैं। इस दिन के बहुत से फ़ज़ाइल हैं, लिहाज़ा इस दिन को ग़फ़्लत में गुज़ारने के बजाए इबादत में गुज़ारना चाहिये।

﴾11﴿ ……ज़ुल क़'दतिल ह़राम

ज़ुल क़'दतिल ह़राम की 20 तारीख़ को आ़शिक़ाने रसूल बाबुल मदीना कराची में ह़ज़रते

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का उ़र्स मुबारक बड़े एहतिमाम से मनाते हैं। और 29 तारीख़ को आ'ला ह़ज़रत के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن के उ़र्स मुबारक की तक़रीबात दुन्या भर में मुन्अ़क़िद की जाती हैं।

﴾12﴿ …… ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम

10 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को ईदुल अज़्ह़ा मज़्हबी जोश व जज़्बे से मनाई जाती है, इस मौक़अ़ पर आ़शिक़ाने रसूल क़ुरबानी का एहतिमाम भी करते हैं नीज़ ह़ज जैसा अहम फ़रीज़ा भी इसी माहे मुबारक में अदा किया जाता है।

दा'वते इस्लामी

बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

इस पुर फ़ितन दौर (या'नी पन्दरहवीं सदी हिजरी) में कि जब दुन्या भर में गुनाहों की यलग़ार मुसलमानों की अकसरिय्यत को बे अ़मल बना चुकी थी, मस्जिदें वीरान और गुनाहों के अड्डे आबाद हुवे चले जा रहे थे इन नाज़ुक ह़ालात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने एक वलिय्ये कामिल को प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखयारी उम्मत की इस्लाह़ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया जिन्हें दुन्या अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम से पुकारती है ।

आप की ह़याते मुबारका की चन्द झलिकयां

सुवाल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नाम मुबारक क्या है ?

जवाब आप का नाम मुबारक "मुह़म्मद" और उ़र्फ़ी नाम "इल्यास" है आप की कुन्यत "अबू बिलाल" और तख़ल्लुस "अ़त्त़ार" है चुनान्चे मुकम्मल नाम इस त़रह़ है : "अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार" क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सुवाल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की विलादते बा सआ़दत कब, कहां और किस दिन हुई ?

जवाब 26 रमज़ानुल मुबारक सि. हि. 1369 ब मुत़ाबिक़ 12 जूलाई सि. ई.1950 बरोज़ बुध, पाकिस्तान के मशहूर शहर बाबुल मदीना कराची में नमाज़े मग़रिब से कुछ देर क़ब्ल हुई ।

(सुवाल) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिद साहि़ब का नाम क्या है ?

(जवाब) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे बुज़ुर्गवार का मुबारक नाम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى है जो कि एक बहुत परहेज़गार इन्सान थे ।

(सुवाल) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वालिदए माजिदा का नाम क्या है ?

(जवाब) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वालिदए माजिदा का नाम आमेना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا है जो एक नेक और परहेज़गार ख़ातून थीं ।

(सुवाल) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लाहे़ उम्मत के जज़्बे के तह़त किस अ़ज़ीमुश्शान मदनी तह़रीक की बुन्याद रखी ?

(जवाब) आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआन व सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" की बुन्याद रखी और इसे अपनी शबो रोज़ की मेह़नत और ख़ूने जिगर से परवान चढ़ाया ।

(सुवाल) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें क्या मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया ?

(जवाब) आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें येह मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया :
"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मन्क़बते अ़त्तार

सुन्नत को फैलाया है अमीरे अहले सुन्नत ने
बिदअ़त को मिटाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

हज़ारों गुमरहों को वा'ज़ व तह़रीर से अपनी
रहे जन्नत दिखाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

करा कर बहुत से कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार से तौबा
जहन्नम से बचाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

हज़ारों आ़शिक़ाने लन्दन व पेरिस को दीवाना
मदीने का बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

लाखों फ़ैशनी चेहरों को दाढ़ी और सरों को भी
इमामे से सजाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

वोह फ़ैज़ाने मदीना रात दिन तक़्सीम करता है
जिसे मर्कज़ बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

बहुत मेह़नत लगन से अपने प्यारे दीन का डंका
दुन्या में बजाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

इलाही फूलता फलता रहे रोज़े ह़श्र तक येह
गुलिस्तां जो लगाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

इस नाकारा आ़इज़ को ख़ुलूस अपने की शम्अ़ का
परवाना बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

अवराद व वज़ाइफ़

﴿1﴾ يَاقَادِرُ : जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुवे पढ़ने का मा'मूल बना ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन उस को इग़्वा नहीं कर सकेगा।

﴿2﴾ يَامُحْيِى، يَامُمِيْتُ : 7 बार रोज़ाना पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जादू असर नहीं करेगा।

﴿3﴾ يَامَاجِدُ : 10 बार पढ़ कर शरबत वग़ैरा पर दम कर के जो पी लिया करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बीमार न होगा।

﴿4﴾ يَاوَاجِدُ : जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।

दुरूदे रज़विय्या शरीफ़

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ
صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ [1]

येह दुरूद शरीफ़ हर नमाज़ के बा'द ख़ुसूसन बा'द नमाज़े जुमुआ मदीनए मुनव्वरा की जानिब मुंह कर के सो मरतबा पढ़ने से बे शुमार फ़ज़ाइल व बरकात ह़ासिल होते हैं।

(पाक व हिन्द में का'बा शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ करने से मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ भी मुंह हो जाता है।

[1] ......الوظيفة الكريمة، ص ٢٠

मन्क़बते ग़ौसे आ'ज़म

या ग़ौस ! बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ
बग़दाद बुला कर मुझे जल्वा भी दिखाओ

दुन्या की महब्बत से मेरी जान छुड़ाओ
दीवाना मुझे शाहे मदीना का बनाओ

चमका दो सितारा मेरी तक़्दीर का मुर्शिद
मदफ़न को मदीने में जगह मुझ को दिलाओ

नय्या मेरी मंजधार में सरकार फंसी है
इमदाद को आओ मेरी इमदाद को आओ

हसनैन के सदक़े हों मेरी मुश्किलें आसां
आफ़ातो बलिय्यात से या ग़ौस ! बचाओ

या पीर ! मैं इस्या के तलातुम में फंसा हूं
लिल्लाह गुनाहों की तबाही से बचाओ

अच्छों के ख़रीदार तो हर जा पे हैं मुर्शिद
बदकार कहां जाएं जो तुम भी ना निभाओ

अह़कामे शरीअ़त रहें मल्हूज़ हमेशा
मुर्शिद मुझे सुन्नत का भी पाबन्द बनाओ

अ़त्तार जहन्नम से बहुत ख़ौफ़ज़दा है
या ग़ौस ! इसे दामने रह़मत में छुपाओ

बन्दगी की ह़क़ीक़त

बन्दगी तीन चीज़ों का नाम है : (1) अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी करना (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा क़ज़ा व क़द्र और तक़सीम पर राज़ी रहना । (3) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर देना । (बेटे को वसिय्यत, स. 37)

या रब्बे मुह़म्मद मेरी तक़्दीर जगा दे[1]

या रब्बे मुह़म्मद ! मेरी तक़्दीर जगा दे
सह़राए मदीना मुझे आंखों से दिखा दे

पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे
या रब ! मुझे दीवाना मदीने का बना दे

रोता हुवा जिस वक़्त मैं दरबार में पहुंचूं
उस वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब दिखा दे

दिल इश्क़े मुह़म्मद में तड़पता रहे हर दम
सीने को मदीना मेरे अल्लाह बना दे

---

[1] ......वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112

बहती रहे अकसर शहे अबरार के ग़म में
रोती हुई वोह आंख मुझे मेरे ख़ुदा दे

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में
मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा
जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे

देता हूं तुझे वासिता मैं प्यारे नबी का
उम्मत को ख़ुदाया रहे सुन्नत पे चला दे

अल्लाह मिले हज की इसी साल सआदत
बदकार को फिर रौज़ए महबूब दिखा दे

अत्तार से महबूब की सुन्नत की ले ख़िदमत
डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे

अपने इल्म पर अमल की बरकत

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : مَنْ عَمِلَ بِمَا عَلِمَ وَرَّثَهُ اللّٰهُ عِلْمَ مَا لَمْ يَعْلَمْ जिस ने अपने इल्म पर अमल किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा इल्म अता फ़रमाएगा जो वोह पहले ना जानता था।

(حلیۃ الاولیاء، الرقم ۴۵۵ احمد بن ابی الحواری، الحدیث ۱۴۳۲۰، ج ۱۰، ص ۱۳)

सलातो सलाम[1]

ताजदारे हरम ऐ शहनशाहे दीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
हो करम मुझ पे या सय्यिदल मुर्सलीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

दूर रह कर ना दम टूट जाए कहीं — काश तयबा में ऐ मेरे माहे मुबीं
दफ़्न होने को मिल जाए दो गज़ ज़मीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

कोई हुस्ने अमल पास मेरे नहीं — फंस ना जाऊं क़ियामत में मौला कहीं
ऐ शफ़ीए उमम ! लाज रखना तुम्हीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

दोनों आलम में कोई भी तुम सा नहीं — सब हसीनों से बढ़ कर के तुम हो हसीं
क़ासिमे रिज़्क़े रब्बुल उला हो तुम्हीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

फ़िक्रे उम्मत में रातों को रोते रहे — आसियों के गुनाहों को धोते रहे
तुम पे क़ुरबान जाऊं मेरे महजबीं — तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

---

[1]......वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 603 ता 604

फूल रह़मत के हर दम लुटाते रहे यां ग़रीबों की बिगड़ी बनाते रहे
हौज़े कौसर पे मत भूल जाना कहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
ज़ुल्म कुफ़्फ़ार के हंस के सहते रहे फिर भी हर आन ह़क़ बात कहते रहे
कितनी मेह़नत से की तुम ने तब्लीग़े दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
मौत के वक़्त कर दो निगाहे करम काश ! इस शान से येह निकल जाए दम
संगे दर पर तुम्हारे हो मेरी जबीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
अब मदीने में हम को बुला लीजिये और सीना मदीना बना दीजिये
अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म इमामे मुबीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
इश्क़ से तेरे मा'मूर सीना रहे लब पे हर दम मदीना मदीना रहे
बस मैं दीवाना बन जाऊं सुल्ताने दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
दूर हो जाएं दुन्या के रन्जो अलम हो अ़ता अपना ग़म दीजिये चश्मे नम
मालो दौलत की कसरत का त़ालिब नहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
अब बुला लो मदीने में अ़त्तार को अपने क़दमों में रख लो गुनहगार को
कोई इस के सिवा आरज़ू ही नहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

दुआ के मदनी फूल

प्यारे मदनी मुन्नो ! दुआ मांगना बहुत बड़ी सआदत है । क़ुरआन व अहादीसे मुबारका में जगह जगह दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई गई है । एक ह़दीसे पाक में है : “क्या तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांगते रहो कि दुआ मोमिन का हथियार है ।”[1]

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक दुआ से बढ़ कर कोई शै नहीं ।[2]

[1]......مسند ابی یعلی، الحدیث: ١٨٠٦، ج ٢، ص ٢٠١

[2]......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ٣٣٨١، ج ٥، ص ٢٤٣

ماخذ ومراجع

1	قرآن مجید کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور	
2	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
3	انوار التنزیل واسرار التاویل	ناصر الدین عبد اللہ ابو عمر بن محمد شیرازی بیضاوی متوفی ۶۹۱ھ	دار لفکر بیروت
4	الجامع الاحکام القرآن تفسیر قرطبی	امام محمد بن احمد القرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
6	صحیح البخاری	امام محمد اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
7	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
8	سُنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی
9	سنن ابی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء الثرات العربی
10	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید القزوینی متوفی ۲۷۳ھ	دار الفکر بیروت
11	المسند لابی یعلی	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد الموصلی متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
12	المعجم الکبیر	امام سلیمان احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
13	المعجم الاوسط	امام سلیمان احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
14	ابن ابی الدنیا	امام ابو بکر عبد اللہ بن محمد القرشی متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
15	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ھیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
16	المصنف لابن ابی شیبه	امام عبد اللہ بن محمد ابی شیبہ متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت
17	کنز العمال	علامہ علاء الدین علی المتقی الہندی متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
18	تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی الخطیب البغدادی متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
19	بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
20	سنن الکبری للنسائی	امام احمد بن شعیب النسائی متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
21	مشکوۃ المصابیح	الشیخ محمد بن عبد اللہ الخطیب التبریزی متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
22	مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی	ضیاء القرآن پبلشز لاہور
23	الشمائل المحمدیة	الامام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی
24	الاصابة فی تمییز الصحابة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر العسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ
25	الریاض النضرة	امام ابو جعفر محب اللہ طبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
26	ازالة الخفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
27	جامع کرامات الاولیاء	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
28	بهجة الاسرار	ابو الحسن نور الدین علی بن یوسف شطنوفی متوفی ۷۱۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
29	احیاء علوم الدین	امام محمد بن احمد الغزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
30	فتح القدیر	کمال الدین محمد بن عبد الواحد المعروف بابن ہمام متوفی ۸۶۱ھ	کوئٹہ
31	تبیین الحقائق	الامام فخر الدین عثمان بن علی زیلعی حنفی متوفی ۷۴۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
32	الدر المختار	علامہ علاؤ الدین الحصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت
33	فتاوی ھندیه	ملا نظام الدین متوفی ۱۱۶۱ھ وعلمائے ہند	کوئٹہ پاکستان
34	الفتاوی الرضویة	اعلیحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आमात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-044-0
0101618
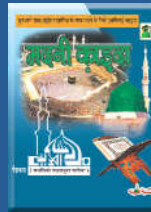
मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net